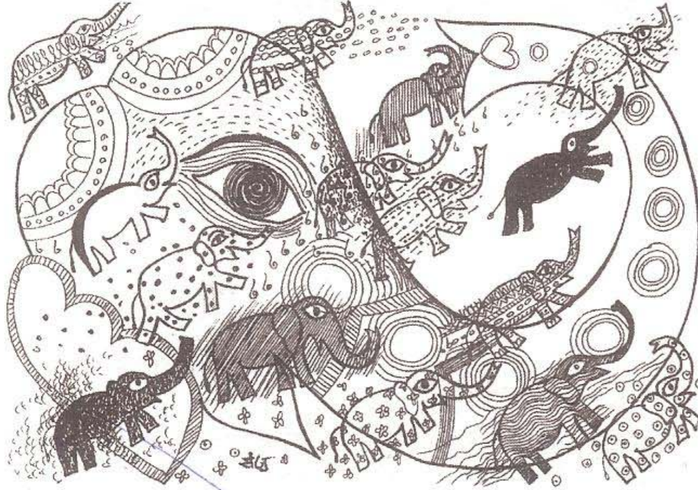
पड़ठ

कुमार पवन

प्रायः एक युग बाद कुमार पवन फेर सँ लेखन मे सक्रिय भेल छथि। विगत शताब्दीक नवम दशकक शुरुआत सँ लेखन आंरभ कर'वला कुमार पवन मैथिलीक सुपरिचित कवि, कथाकार आ व्यंग्यकार छथि। किछुए कथा आ तीन चारि दर्जन कविताक बल पर मैथिली मे अपन फराक पहिचान राख'वला ई एक टा विशिष्ट कवि-कथाकार छथि। हिनक नव दौरक प्रारंभ एक टा यादगार दीर्घ कथा आ पाँच गोट कविताक संग भ' रहल छनि। प्रायः कतेको वर्ष सँ मैथिली मे एहन सशक्त कथा पढ़बा लेल नइँ भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक व्यापक पाठक वर्ग केँ ई स्मरणीय शुरुआत बुझेतनि।

—संपादक

अन्हार मे डुबैत खिरोइ...



मोन मे औनाइत जाहि बेचैनी केँ टारि देबाक फेर मे हम एत' प्रायः भागि क' आयल छलहुँ, से एखनहुँ कहाँ छोड़ि रहल अछि... ईंटाक पाया आ काठक गार्डरवला एहि जर्जर पुल पर ठाढ़ भ' नीचाँ लगभग सुखायल मिरतुक्की खिरोइ आ चारू दिस गर्द-गर्द भेल वातावरण केँ देखि मोन हल्लुक क' लेबाक आशा करब आब व्यर्थे बुझा रहल अछि...। खिरोइ, जे हमर गामक पूर्वी सीमान पर अदौ सँ बहैत हमरा लोकनि केँ एक टा परिचिति दैत आबि रहल अछि, आइ केहन दुब्बरि-पातरि सनटिटही सन भेलि अपन अस्तित्वक लेल संघर्ष क' रहल अछि, से देखनहि जानल जा सकैए। एक टा दीर्घ निसास छोड़ैत हम चारू दिस नजरि खिरबैत छी। सूर्य ढरकि चुकल छथि...। खूने खुनाम पश्चिमाकाश...। घुरिआयल परिवेश...। नहू-नहू उतरैत अन्हार...। आ अन्हार मे डूबैत खिरोइ...।

हम एत' की क' रहल छी? एखन तँ गाम पर रहबाक चाही। ओत' धमगज्जर मचल हेतै। कल्हुका भोजे तेहन रहै जे अजुका भोज लेल लोक सभ भोरहि सँ उत्साहित अछि। जटावला भाँगक पत्ती भोरहि मे फूलय लेल ध' देल गेल छलै। कमलू भाइक खास आग्रह छलनि। से छनि। गाम मे भोज रहौक तँ ओ दड़िभंगा मे अटकि नहि सकैत छथि। ओ काल्हिए दसबजिया ट्रेन सँ आबि गेल छलाह। उत्साहपूर्वक भनसिया सभक संग भरि दिन लागल रहलाह। वैह किऐ? बहुतो लोक आयल अछि। कॉलेजिया नवयुवक सभ। काल्हिए सँ हरित क्रांतिक योजना पर अमल भ' रहल छैक। भोर सँ फुलैत भाँग केँ मीजि-मीजिक' पाँच पानि सँ धोने हेताह शोभन...। सिलौट पर ताधरि पिसने हेताह जाधरि भाँग सिलौट ने छोड़ि देने हैत। भाँग मे देल गेल हेतै खीराक बीया, गुलाबक पत्ती, सौंफ, दछिनी, मरीच आदि-आदि कैक तरहक मसाला। वैन्यू छलै टीसन। नवीन झाक चाहक दोकान। कमलू भाइ साफ कहने छलथिन नवीन झा केँ, कोनो हालति मे दस किलो दूध राखय लेल। दूध-चीनीक संग घोरल गेल हैत भाँग। गिलास-पर-गिलास देने हैत सभ...। सबहक मोन आब गुनगुना चुकल हेतै...। एखन धरि तँ सबहक संपर्क भ' चुकल हेतै बाबा बौरहबा सँ—सोझे हॉटलाइन पर। आब तँ एक्कहि टा काज बाकी...।

सरबन बाबूक दलानक विस्तृत अगुअइत मे नोतल ब्राह्मण सभक जुटान भ' रहल हेतनि...। ओत' एखन हमरो रहबाक चाहैत छल...। आ हम एत' एहि पुल पर ठाढ़ छी...। की क' रहल छी हम एत'? सभ हमरा ओत' ताकि रहल हैत...। कमलू भाइ खास क' आ हम...? तखन सँ कतोक बेर गाम दिस विदा होब' चाहलहुँ अछि, मुदा डेगे नहि उठि रहल अछि...। हिम्मति तँ करहि पड़त...। सामाजिक बन्हन केँ अनठिया देब उचित नहि...। जाय तँ पड़बे करत...।

नदीक छरकी...लचका...जरलाहा पीपर... जेना-जेना गाम दिस बढ़ल जा रहल छी अन्हार आर सघनायल जा रहल अछि...। माल-जाल केँ चराक' बाध सँ घुरैत लोक सभ...। मंथर गतिएँ चलैत, पजुआहि करैत, महीस सभ आ ताहि पर बैसल चरबाह सभ सड़कक एक दिस सँ जा रहल अछि। सामने गाछी सभक पच्छिम रेलवे आ तकर ओइ पार गाम। गाछी आ बँसबारिक कारणें अन्हार आर घनगर बुझा रहल अछि। गाछी सभक विरल भाग द' क' इजोत हुलकी द' रहल अछि आ संगहि सुनाइ पड़ि रहल अछि जेनरेटरक फट्-फट्-फट् फट्... अनवरत...।

गाछी पार क' रेलवे लाइन पर चढ़ैत छी...। एतहि सँ स्पष्ट बुझाइत अछि—व्यापक ब्राह्मण समाज जुटि रहल अछि...। पुआरक सैकड़ो बीड़ा पंक्तिबद्ध राखल जा चुकल अछि...। बैसइ जइयौ केर आग्रह सुनबाक लेल उताहुल बूढ़-सेयान-बच्चा-बुतरु-छौंड़ा-छौंड़ीक भीड़...। भोज्य पदार्थ पर टूटि पड़बाक लेल सन्नद्ध अटाठट्ठ लोक...।

रेललाइन सँ सड़कक लभानी पर उतरि जहिना हम आगाँ बढ़ैत छी कि आग्रह भ' जाइत छैक। की रेलम पेल! लोक सभ बीड़ा लूझ' लेल टूटि पड़ैत अछि। केओ चारि-चारि टा बीड़ा लूझि-ओछा पलथी मारिक' बैसैत अछि तँ केयो बीड़ाक अभाव मे चप्पले पर आसन जमा लैत अछि। दब्बू प्रकृतिक लोक बीड़ाक लूटि मे पछुआ गेला संतां हारि क' चुकिए माली बैस जाइत अछि...। ओम्हर जे कनेक हमर-झाँटि-पर-झूलय-बड़का-बड़का-लोक वला लंठै सँ लैस अछि से बलजोरी सरबन बाबूक टाल सँ झीकि-झीकि पुआरक मोटका बीड़ा बना बैस जाइत अछि आ गर्व सँ गर्दनि तानि चारू दिस ताकि रहल अछि जेना कि कहि रहल हो, 'मर्दक

बेटा अछि क्यो तँ टोकि क' देखओ नेज।' लोक फराके सँ हाँ...हाँ...क' रहल अछि परंच केक्कर हिम्मति छै जे समक्ष मे आबिक' रोकय...।

आब पात परसल जा रहल अछि...पुरइनक पात। अद्भुत! आब जखनकि प्रायः सभ भोज मे लोक दड़िभंगा वा पुपरी सँ पातक रेडीमेड प्लेट आ बाटी ल' अनैत अछि तखन पुरइनक पात? सरबन बाबूक हठ छलनि। खजुरबाराक पोखरि सँ आनल गेल छलै बोझक बोझ...। सरबन बाबूक तँ खाली हठ आ इच्छा छलनि। असल व्यवस्था सँ कयलनि राघव लला। से छनि। लोकक हुनका कमी नहि छनि...। बस एक बेर हाक देबाक काज...।

मुदा बाजय रसनचौकी...

से आब भोज शुरू भ' गेल अछि...। चूरा-दहीक भोज...। नहि-नहि, दही-चूराक भोज...। कहियो क्रेज रहै पक्की भोजक माने पूड़ी जिलेबीक भोजक। नामे सुनैत मातर बच्चा सभ किलोल करय लगैत छल...। स्त्रीगण अनेरे प्रसन्न भ' अपन नेना केँ कोरा मे ल' चुम्मा लैत पति केँ कनेडेरिएँ देखय लगैत छलीह...। पुरुखवर्गक तँ कथे कोन? परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि च पुनः पुनः केँ गीरह मे बन्हेने ओ लोकनि भाँगक पुरना पत्ती पीसि देबाक लेल कनिञाक निहोरा करय लगैत छलाह...। मुदा, आब ओकर क्रेज गेलै। आब के पुछैए पूड़ी-जिलेबी-तरकारी केँ? ओ तँ रहरहाँ होइते रहैत छै। आब तँ माघ नहाय से मर्द कहाय। माने जे दही-चूराक भोज क' पाबय से मर्द। बड़का-बड़काक ढोंढ़ी ढील भ' जाइत छनि...। हँस्सी-ठट्ठा छै की? पसेरी भरिक' करेज होयबाक चाही। आ चाही मनीपावरक संग मैन पावर...। से आब लगैए, कनिञा काकीक दुनू बेटा मे एहि दुनू चीजक कमी नहि। दुनू बेटा पौरुष देखौलथिन अछि... आ से भरपूर देखौलथिन अछि...।

पौरुष तँ ओ लोकनि देखबिते रहैत छथि। आब ओही दिनुका बात लिय' ने। अरे, सरझप्पी दिनुका। अस्थिसंचयक बाद श्राद्धक हेतु योजना बनाब' लेल गामक पागधारी लोकनिक बैसार भेल छलनि...। सरबन बाबू दुनू भाँइ ओना तँ एक दोसरा सँ कटल-कटल रहैत छलाह...। एक गोटे ईर घाट तँ दोसर वीर घाट! परंच एखन दुनू गोटे अपना केँ एक टा विशेष प्रकारक अपराध भाव सँ समाने रूपेँ दबल अनुभव क' रहल छलाह। लागि रहल छलनि जेना कि पतिया लागल होनि। पतिया लागब की होइत छै, से ओ लोकनि नेनपने मे देखि चुकल छलाह। जकरा हाथेँ खुट्टा पर बान्हल गाय-बड़द मरि जाइत छलै तकरा गरा मे मरल पशुक-जउड़ लटकौने प्रायश्चित हेतु घरे-घरे दयनीय मुद्रा मे मौन रहि भीख माँगैत देखि चुकल छलाह...। आइ दुनू भाँइ अपना-अपना केँ किछु ओहने सन स्थिति मे पाबि रहल छलाह...। एम्हर पागधारी नक्षत्र मंडली विचार क' रहल छल—

''श्राद्ध कोन होअय?''

''वैदिकी?''

''पंचदान?''

''के बजलाह पंचदानक नाम? बजबाक गति नहि अछि तँ कम-सँ-कम चुप तँ रहू। अहाँ केँ ई नञि बूझल अछि जे शास्त्रक अनुसार वैदिकी श्राद्ध भेने मुइनहार केँ पइठ होइत छनि? आ सरबन बाबू दुनू भाँइक कोनो हाड़ हिलैत छनि? कथीक अभाव छनि?''

''हँ यौ! अभाव किऐ रहतनि? दोसर, प्रतिष्ठो किछु अर्थ रखैत छैक कि नहि? प्रखंड भरिक कोन गाम मे के नहि चिन्हैत छनि सरबन बाबू केँ?''

''आ राघवेजी कोन कम छथि?''

''हँ! से तँ ठीके! कोन गामक नवयुवक नहि चिन्हैत छनि राघव केँ?''

''असल मे चिलमक सम्बन्धे ततेक विस्तृत होइत छैक...।''

''फेर...। की बाजि देलहुँ अहाँ? जखन मुँह खोलब बुड़ित्वे बोकरब। भतृहरि कहने छथि...।''

''आब भतृहरि केँ एखन रहय दियनु। ट्रैक सँ हटै नहि जाइ जाउ।''

''ठीके कहैत छी। उचित तँ यैह जे वैदिकी होउक।''

''हँ...हँ...। वैदिकीए होउक।...की सरबन बाबू?''

जगमगाइत नक्षत्र मंडलीक मध्य सकुचायल सकपंज-निष्प्रभ बैसल सरबन बाबूक बुद्धि जेना हेरायल सन भ' गेल छलनि। आब जेना झुकल माथ उठयबाक अवसर आ बाट देखाइ पड़ि रहल छलनि...। कनेक महग अवश्य छलै, मुदा दोसर उपाये कोन छलनि...?

''ठीक छै। हमरा दिस सँ हर्ज नहि। कनेक राघवजी सँ सेहो पूछि लियनु।''

''कि राघवजी?''

सबहक नजरि राघव लला पर आबि स्थिर भ' गेल रहनि। धुआँयल मुखाकृति... झड़कल-झड़कल। कारी झामर ठोर...। तमाकुलक योग सँ गनगनायल गाँजाक लाली प'ल उठबिते आँखिक डिम्हा सँ हुलकी देब' लागल रहनि...।

''ठीके छै। जे सबहक विचार से हमरो...।''

आब भोज। नक्षत्र मंडलीक अनुभवी पाकशास्त्री सभ उनटि-पुनटि क' एहि मुद्दा पर विचार करय लगलाह...। खूब घमर्थन भेल...। अन्ततः निर्णय देल गेल—

''एकादशा दिन यदि संभव होअय तँ तुलसी फूल वा कनकजीर वा करिया कामोदक पुरना अरवा चाउर। जँ से उपलब्ध नहि भ' सकय तँ बासमती तँ अबस्से होअय। फेर राहड़िक दालि...सात टा तीमन...बड़, बड़ी, पापड़, दही, चीनी, सकड़ौरी आदि-आदि।''

''आ द्वादशा दिन पूड़ी-जिलेबीक भोज की करबह हौ सरबन! जखन एतेक भेबे केलै तँ बनियाँवला भोज की करबह। ओहुना कनिञा काकीक भोज लेल सबहक मोन टाँगल छै...। से दही-चूराक करह। भगलपुरिया कतरनी चूरा... कम सँ-कम चारि बेर अहगर क' छल्हिगर दही...चीनी...डालना...तीलक अँचार...आलुक अँचार...नोन-मिरचाइ आ अंत मे बुनियाँ...की?''

''ठीक छै ने सरबन बाबू?''

''मुदा, इस्टीमेट?''

''बनाब' हौ गोपाल। तों तँ हिसाब-किताब मे माहिर छह। बड़का कक्का आ भुटकुन बाबा सँ पूछि लहुन। आ अहूँ लोकनि विचार-सहयोग दियनु मास्टर साहेब आ नेता जी...।''

एस्टीमेट बनल। श्राद्ध आ भोज दुनू मिलाक' प्रायः डेढ़ लाखक! सरबन बाबूक हवा गुम्म आ राघव लला सटकदम्म...।

''की सरबन बाबू, भेल ने?''

सरबन बाबू दुनू भाँइ केँ चुप देखि ठीकेदार साहेब केँ नहि रहल गेलनि, ''एना चुप किऐ छी? टकाक दिक्कति अइ? ई दिक्कति कोनो दिक्कति छै? असल बात तँ ई जे अहाँ सभ चाहैत की छी? जँ चाहैत छी तँ व्यवस्था भ' जेतै। हम कोनो समाज सँ बाहर थोड़े छी? आ जँ अवसर पर काज नञि आबय तँ धन बेकार। कथी? सधयबाक चिन्ता? भक्क! अरे माय-बाप फेर घुरिक' नहि अबैत छथिन। ओ पुत्र केँ जन्म कथी लेल दैत छथिन? एही लेल ने जे पुत्र समय पर पुरुषार्थ देखाबय? एहन श्राद्ध करय... एहन ब्रह्मभोज करय जे उद्धार क' देअय... स्वर्गक फाटक फोलि देअय। आ से अवसर उपस्थित अछि अहाँ सभक समक्ष। आब आवश्यकता अछि पुरुषार्थ देखयबाक।''

''ठीके तँ कहैत छथि भाइ। बेसी सोचल नहि जाओ। अरे, समय पर पाइ आपस क' सकबनि तँ बेस, नहि तँ टीसन लग सड़कक कात महक जे दसकठवी गाछी अछि सैह लिखि देबनि भाइ केँ। ओहुना आब गाम महक जमीनक प्रति मोह बेकारे। गाछिओ तँ उजड़िए गेल अछि...।''

ठीकेदार साहेबक मुंशी भोगी झाक मंतव्य नीक जकाँ बूझि रहल छलाह सरबन बाबू। गँजेड़ी

राघव बूझय वा नहि। जमीनक ओइ टुकड़ी पर बहुत दिन सँ नजरि छनि ठीकेदार साहेबक। ओ ओत' मार्केट कॉम्पलेक्स बनाब' चाहैत छथि। सामान्य स्थिति रहैत तँ सरबन बाबू ठीकेदारक एहि कूटनीतिक चालिक जबरदस्त जवाब दित'थनि...। मुदा, एखन तेहन ने उलंग फँसल छथि जे कोनो आन बाटे ने सूझि रहल छनि। के देत डेढ़ लाख रुपैया? जे देत से बदला मे किछु-ने-किछु चाहबे करत। नि:स्वार्थ मदति आब के ककरा करैत छै? कम-सँ-कम ई समय पर द' तँ रहल अछि। सरबन बाबू चारू दिस तकलनि...। सबहक दृष्टि मे एक्के टा आग्रह। हँ कहि दियौक ने। सपूत बनू...अपन नाम कें सार्थक करू...!

''हम तँ तैयार छी। मुदा, एक बेर राघव जी कें सेहो पूछि लियनु।''

''की राघव जी?''

ठीकेदार साहेब आ हुनक मुंशी भोगी झा कें बेछिल्ले बाँस धाँसि देबाक योजना मोनहि मोन बनबैत आ तत्काल स्थगित करैत राघव लला कें प्रश्न सुनितहि लगलनि जेना केओ हुनक पौरुष कें ललकारि रहल होनि। क्रोध बाट बदलि क' सरबन बाबू पर केन्द्रित भ' गेलनि—

''देखै जाइ जाउ। हम कोनो मउगीक साया मे घुसिया क' रह'वला मर्द नहि छी। सभ कें अपन फिकिर कर' लेल कहियौ। राघव मर्द अछि आ मर्द वला बात कहत। आ मर्दवला बात वैह अछि जे लागय से देआइ, मुदा बाजय रसनचौकी...।''

पित्त तँ सरबन बाबूक सेहो लहरलनि, मुदा गरा मे उतरी तँ हुनके छलनि। दबा गेलाह...।

अजेय योद्धा सभक पराक्रम...

से आइ द्वादशाक जबरदस्त भोज भ' रहल अछि...। लगैए पूरा गाम उनटि आयल अछि...। हाथ जोड़ि क' सबहक स्वागत करैत दुनू भाँइक आग्रह, ''मोन भरि खाइ जाउ। जे वस्तु जतेक चाही से लिय'। कोनो वस्तुक कमी नहि।'' कमी किऐ रहतै? ठीकेदार साहेबक सहयोग देखि भरि गामक युवक लोकनिक उत्साह फरकि उठल छलनि...। संगहि सहयोग छलनि भमरपुराक सोगारथ यादवक।

सोगारथ यादव। सरबन बाबूक परम मित्र। प्रखंड राजनीतिक संगी। ढढ़िया, मिल्की, खजुबारा, भभरपुरा, खेरिया टोल, राढ़ी माने ई जे परोपट्टाक सभ गाम छनि मारल गेल...। महिसबार सभ कें सोझे बथाने पर जा पकड़लनि सोगारथ बाबू, ''हौ भाइ सभ, साल भरि तँ देहातक दूध एकत्र क'...पानि मिला...ड्राम मे भरि...विदाउट टिकट जनता ट्रेन सँ जाक' दड़िभंगा मे बेचिते छह...चानी कटिते छह...। कहियो क' किछु पुण्यो कमाबह। बस चारि दिनुका दूध दएह। बूझ' जे हमरे दैत छह। चारिम दिन एक-एक टा पाइ गनबा लएह...।'' सोगारथ यादवक निशाना कतहु खाली जानि। ततेक ने दूध भेलै जे सय तौला...नहि-नहि, तौला नहि खोर मे पौरल गेल दही...।

''अढ़ाइ सय खोर...।''

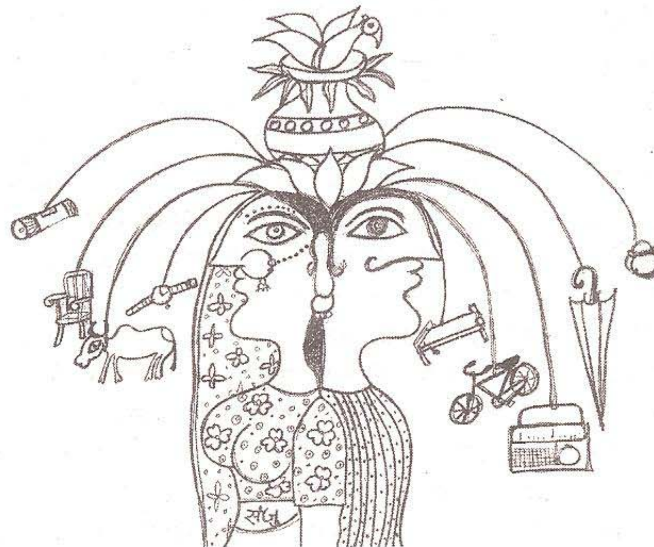
''तँ तोरा माने की? अट्ठारह मन अरवा चाउर आ बीस मन चूड़ा खयनिहार गाम मे एहि सँ कम मे की होइतै?''

से दुनू भाँइक आग्रह जे मोन भरि खाइ जाउ आ कामना करै जाउ जे कनिञा काकी कें पइठ होइन...। पंक्तिबद्ध आसन जमौने भोज खयनिहार सभ...। एक टा पाँति पच्छिम मुँहे तँ दोसर पाँति पूब मुँहे...। एहिना तेसर पाँति पश्चिम मुँहे तँ चारिम पाँति पूब मुँहे...। सम्मुखक दू पाँतिक बीच मे बारिक लोकनि कें अयबा-जयबा लेल रस्ता। एत' सँ ओत' धरि पाँति-पाँति मे कुम्भकोपरिदधिचिपटान्नशर्करालवणव्यंजनानिम-धुराणि च सँ जूझैत लोक सभ...। चलैत मुँहक चपर-चपर...। बारिक लोकनिक 'ई लाबह हौ', 'ओ लाबह हौ' केर गुंजित स्वर...। सघन भ' गेल अन्हार सँ लड़ैत जेनरेटरक पचासो ट्यूब-लाइट...जगमग...जगमग...सभ किछु जगमग...।

समाजक पैघ-पैघ नाकवला लोकसभ मे अपना कें अग्रगण्य बुझनिहार अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबू लोकनि पहिल खेप मे नहि बैसलाह अछि। ओ लोकनि दोसर वा तेसर खेप मे बैसताह। एखन तँ ओ सभ पाँति सबहक मध्य मे टहलैत कखनहुँ भोज खयनिहार सभ सँ दहीक स्वाद वा डालना मे नोनक मात्राक मादे पूछि रहल छथि, तँ कखनहुँ बारिक लोकनि कें कोनो खास जगह पर खास वस्तु ल' क' पहुँचबाक निर्देश उछालि रहल छथि...।

मूड़ी गाड़ि तन्मय भ' भोजनलीन लोक सबहक लगन देखि जेना...जेना किछु मोन पड़ि रहल अछि...। हँ...कनिञे काकी कहैत छलीह खिस्सा...। मैथिल सभक भोजनपटुताक मादे सुनि इंद्रक घमंड फड़कि उठल रहनि। बड़का भोजन भट्ट छथि मैथिल सभ तँ हमरा ओतय आबथु। हम नोत दैत छियनि। हमर व्यवस्थानुरूप भोजन क' कय देखाबथु तँ हम इन्द्रासन हारि जायब। स्वीकार करताह? अप्पन पसिन्नक क्षेत्र मे आबि फँसल शत्रु कें देखि जेना योद्धा कें हँसी लागि जाइत छै तहिना उर्ध्व अहंकारी देवराजक एहि मूर्खतापूर्ण चुनौती पर मुसकिया देलनि मैथिल लोकनि। स्वीकार क' लेल गेल चुनौती...।

परंच इन्द्रो तँ पक्का खिलाड़ी छलाह। भोजक जबरदस्त आयोजन कयलनि। अपार खाद्य-सामग्री। मुदा, आहि रौ बा! ई की? परम्परानुसार सम्मुख पाँति बनाक' बैसल मैथिल लोकनिक दहिन हाथ पर काँखि सँ ल' क' पहुँचाधरि बाँसक फराठी राखि जउड़ सँ लपटि क' बान्हि देल गेलनि। आब भोजन क' देखाबथु...। मुदा वाह रे मैथिल! ओ मैथिल केहन जे कोनहु परिस्थिति मे भोजन क' कय नहि देखाबय? सम्मुखक पाँति सभ कनेक लगीच घुसुकि आयल आ आमने-सामने बैसल मैथिल लोकनि एक दोसरा कें एक-दोसराक पात पर सँ खाद्य-सामग्री ल' बिनु दहिन हाथ मोड़ने खोआबे लगलाह...। जल पीबाक लेल वाम हाथ तँ मुक्त छलनिहे। इन्द्र चारू नाल चित्त! भोजनोपरान्त गर्वित मैथिल लोकनिक समक्ष ठाढ़ नतशीश इन्द्र अपन इन्द्रासन ग्रहण करबाक निवेदन कयलथिन...। मैथिलक उदार गर्वोक्ति भेलनि, ''इन्द्रासन अपनहि राखल जाओ। हम सभ ल' क' की करब? मुदा, स्मरण रहय जे पुन: हमरा लोकनिक भक्षण-सामर्थ्य कें चुनौती देबाक भूल नहि होअय। ई हमर सबहक क्षेत्र थिक। एहि क्षेत्र मे हम सभ अजेय छी।...''



से आइ एक कात मे ठाढ़ हम एहन अजेय योद्धा सभक पराक्रम देखि रहल छी...। नजरि भोजस्थलक कात मे पाँति सभक छोर पर स्थित सड़क दिस जाइत अछि...। ओत' समाजक दीन-हीन वर्गक महिला, पुरुष, छौंड़ा, छौंड़ी

सभ अलम्यूनियमक थारी आ बट्टा नेने प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि...जे कखन लोक सभ भोजन समाप्त क' कय उठत आ ओकरा सभ केँ अघायल लोकक अँइठ उठयबाक अवसर भेटतै...। भूखक मारल लोकक एहि भीड़ मे सेहो कैक टा छोट-छोट वर्ग छै...। अपना सँ तथाकथित निम्न वर्गक लोक केँ कनेक फराके रहबाक निर्देश देबाक प्रकृति एहू वर्गक लोक सभ मे छै—से स्पष्ट देखाइ पड़ि रहल अछि...।

पच्छिम भर अकास मे लौका लौकब शुरू भ' गेलैए। नहू-नहू मेघ ऊपर उठि रहल अछि...। रहि-रहि क' लौकति लौका भोज खयनिहार आ खुयनिहार दुनू पक्ष केँ कनेक हड़बड़ा देलक अछि। किछु गोटे लोक सभ केँ शांतिपूर्वक भोजन करबाक आग्रह क' रहल छथि। लगैए इन्द्र फेर आइ गड़बड़ी पर उतारू छथि...।

ओम्हर गाम भरिक एकत्रित कुकुर सभ आपस मे कटाउझ क' रहल अछि। कटाउझ मे जे कुकुर हारि जाइत अछि से कनेक हटि क' विचित्र विलम्बित स्वर मे भूक' लगैत अछि... जेना कानि रहल हो...। ओह! ओहने सन...। जेना ओहि राति कानि रहल छल...। ओहि रातुक सघन निस्तब्धता केँ चीरैत कुकुर सभक रुदनक ओ थरथराइत बिझायल छुरी...।

आगि-पानि-लोह-पाथर...

ओही रातुक बाद आयल छल ओ जेठक एक टा पचपचायल भोर...। उसीन क' राखि देब'वला तौसायल कारी रातुक बादक ओ भोर...।

साँझहि सँ सड़ल गुमकी छलै...। पसेना-पसेना देह...कखनो सुखयबाक नाम नहि...। ऊपर सँ लाखनि सँ भरल डबराक मच्छरक प्रकोप...। एम्हर-सँ-ओम्हर दौगैत...गुम्हरैत...भूकैत...कनैत कुकुर सभ...। एक्को रत्ती चैन नहि...। छटपट-छटपट करैत राति बहुत नहू-नहू बीति रहल छल...। कखनो-कखनो डबरा महक जलमुर्गी सभ चियों-चियों क' उठैत छल। ककरो चैन नहि...। कोना होइतै? जेठ खतम होब' मे प्राय: छओ दिन रहि गेल रहै परंच बुन्न पड़बाक नाम नहि...। भरि दिन अकास सँ आगि बरिसैत छलै आ साँझहि सँ जे बोकर' लगैत छल पृथ्वी छेहा तौस से राति भरि उसिनाइत रहैत छल प्राणिमात्र...। पता नहि कहिया बुन्न पड़तै...?

हम ठेकानि नहि सकलियै जे कतेक राति भेल हेतै...। प्राय: डेढ़...नहि दू...। कनेक पुरबा सिहकलै...। पसेना सँ भीजल देह ठंडायल आ प'ल भरिआय लागल...। कुकुर सभक तेज झौहटि सँ निन्न टूटल...। एतेक किऐ लागि रहल छै...? भक्क! कुकुरो के कोनो ठेकान छै? जरूरी छै जे कोनो चोरे केँ देखि क' भूकल होअय? भ' सकैए दोसर टोलक कुकुर पर नजरि पड़ल हेतै कि शुरू भ' गेल हैत...। सोचैत-सोचैत फेर प'ल भरिआय लागल...। कखन बरखा अयलै...हम किछु नहि बूझि सकलियै...।

जेना एक टा झटका खाक' निन्न टूटल होअय...। बाहर सड़क दिस गुलगाल भ' रहल छलै...। क्रमश: तेज होइत...। कोठली सँ बाहर दलान पर अयलहुँ। भोर भ' चुकल रहै मुदा एखन सूर्योदय हेबा मे किछु विलम्ब रहै। हमर घरक पूब द'क' जे रेल लाइन गेल अछि—दखिन-पूब सँ उत्तर-पच्छिम दिस—तेम्हरे लोक सभ जा रहल छल...। की बात छै? हम किछु आगाँ बढ़लहुँ...। ओकील ककाक दलान पर किछु लोक ठाढ़ भेल रेल लाइन दिस इशारा करैत बतिया रहल छलाह...। हुनकर सभक तर्जनी केँ पाछाँ करैत हमर नजरि देखलक जे रेल लाइनक आस-पास किछु महिसवार, हाथ मे लोटा नेने 'पोखरि दिस' जयबा लेल बहरायल, किछु भलेमानुस आ ज'न-बोनिहार केँ अढ़यबाक लेल विदा भेल, किछु कृषक लोकनि विस्मय आ दु:खक मुद्रा मे बहस क' रहल छथि...। एतेक फरकी सँ बात बूझब कठिन छल...।

''की भेलैए?'' हम पुछलियै।

''लगैए क्यो कटि गेलैए।''

''के?''

''हौ, हमरा तँ लगैए जे काल्हि मैट्रिकक रिजल्ट बहार भेलै। कहाँदन बड्ड खराब रिजल्ट भेलैए। अबस्स कोनो फेल केलहा छौंड़ा कटि गेल हेतै।''

''नहि हौ, कोनो विद्यार्थी नहि रहल हेतै ओ। आइ-काल्हि ट्रेनक छत पर चढ़बाक बड्ड चलन भ'गेलैए। ओही मे सँ कोनो अगत्ती टपकि पड़ल हेतै।''

''ई अहाँ कोना कहैत छियै भाइ? ईहो तँ भ' सकैए जे कोनो तड़िपिब्बा वा गँजपिब्बा औँघरा गेल हैत रेल लाइन पर...आ...।''

जतेक मुँह ततेक बात। ओम्हर ओकील कका एहि सभ सँ निरपेक्ष मनोयोगपूर्वक अपन बड़द केँ सानी खुआ रहल छलाह।

''की कका, के कटि गेलैए?''

''पता नहि!'' ओ हमरा दिस तकबो नहि कयलनि। नादि पर नजरि गाड़ने रहलाह। हुनक ई निरपेक्षता हमरा कनेक विचित्र जकाँ लागल। लागल जे हिनका जरूर बूझल छनि। कदाच् जानि-बूझि क' अपना केँ कोनो काज मे ओझरा क' रखने छथि। हम रेल लाइन दिस बढ़लहुँ।

''हौ बौआ, तों ओम्हर नहि जाह। तोहर करेज एतेक मजगूत नहि छह...बर्दाश्त नहि हेतह...।'' ई हमर माय छलि जे पता नहि कखन सहटि क' पाछाँ-पाछाँ एत' धरि आबि गेल छलि।

''तों चिन्ता नहि कर। हम तुरंत आबि जायब। आ हमरा किछु नहि हैत। आब हम दस वर्खक ओ समीर नहि छी जे शोणित देखिक' रद्द भ' जायत।'', हम आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ।

हमर पाछाँ-पाछाँ लछमी सेहो ओही दिस जा रहल छलि। ओकर यैह रस्ते छलै। एही द' क' ओ नित्त हीरा बाबूक ओत' बर्तन-बासन कर' जाइत छलि। सामने सँ पप्पू आबि रहल छल। पूछलियै तँ ओ कहलक, ''एतेक तँ निश्चित अछि जे कोनो स्त्री कटल अछि। पैघ-पैघ केस छै। हमर हिम्मत नहि एलाउ कयलक जे लग जाक' देखियै। देखै नञि छियै जे ककरो लग जयबाक साहस भ' रहल छै? सभ दस हाथ फटकिए सँ देखि रहल अछि...आ देखिक' अपन-अपन बाट ध' रहल अछि...। एहन भयानक दृश्य नहि देखल भाइ...। हमर तँ मोन कोनादन क' रहल अछि...। हमरा जाय दिय'...।'' पप्पू घर दिस बढ़ि गेल।

तावत लछमी हमरा सँ आगाँ निकलि रेल लाइन पर घटनास्थल लग पहुँचि चुकल छलि...। आगाँ बढ़ैत हम देखलहुँ जे ओ पुरुष सभक गोल केँ चीरैत भीतर गेलि...। ''अरे बाप रे बाप! दैबा रे दैबा! ई की भेलै रे दैबा। कनिञा काकी अय कनिञा काकी! ई की कयली अय कनिञा काकी?'', लोकसभक गोल मे घेरायल लछमी भोकरि रहलि छलि...। ओ देखाइ नहि पड़ि रहलि छलि, मुदा ओकर करुण-तीक्ष्ण स्वर गूँजि रहल छलै...। आब कोनो संदेह नहि रहि गेल छलै...। हम लपकलहुँ...। गोल मे पैसलहुँ...। हे भगवान! हिला क' राखि देब'वला भीषण वीभत्स दृश्य छल...।

कनिञा काकी, ओ कनिञा काकी, जे वृद्धावस्था दिस डेग बढ़ा चुकलाक बादो सबहक लेल कनिञे काकी छलीह...जे बाट पर चलैत काल एना लगैत छलीह जेना धरती सँ पूछि-पूछि क' डेग बढ़ा रहलि होथि...। जे धरतीए जकाँ सर्वसहा आ अन्तर्मुखी छलीह...जे प्रत्येक जूड़शीतलक भोरे टोल भरिक नवयुवक लोकनिक चानि ठंडा देब' लेल बासि जलक लोटा नेने आबि जुमैत छलीह...। जे तिला सँकराँति दिन सभ केँ ताकि-ताकि क' तिल-चाउर हाथ मे थमा दैत पूछैत छलथिन, ''बौआ तिल बहब' ने?'' से कनिञा काकी आइ रेलक पटरीक आस-पास रोड़ा सभक ढेर पर खंड-खंड भेलि छिड़िआयल पड़लि छलीह...। ओह! हे भगवान!

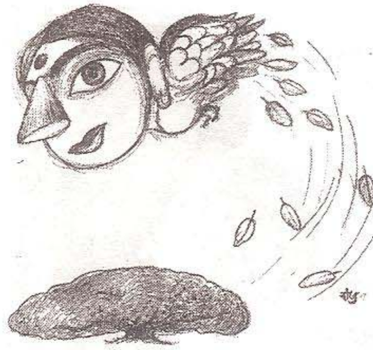
रेलक पुबरिया पटरीक ओइ पार दुनू टाँग...दुनू पटरीक बीच मे धड़ आ पछबरिया पटरीक एहि पार मुंड...। आन-आन अंग जत' छिड़िआयल छलै ओतहि मुंडक स्थिति कनेक

विस्मयजनक! लगैत छलै जेना केओ ठोढ़ीक नीचाँ सँ सटाक' घेंट कटने होइक आ ओरिया क' रोड़ाक ढेर पर राखि देने होइक—उर्ध्वमुख। मुंडक केस माथ सँ एकदम सटल छलै...। चँछायल पीयर चेहरा पर सामने देखैत पथरायल निर्जीव निर्वाक आँखि मे उदासी जेना जमि गेल हो...। केम्हरो सँ कोनो कोण सँ देखतियै तँ हरायल आँखि जेना सोझे अहीं कैँ देखैत अनुभव होइत...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...। आश्चर्य! शोणितक दर्श नहि...। लगैए बरखा बाद मे आयल रहल हेतै...। धोल-पखारल लहास आर भयावह लागि रहल छलै...।

आनन-फानन मे खबरि पसरि गेलै। कनिञा काकीक दुनू पुत्र आ पुतोहु माथ-छाती पीटैत आबि चुकल छलथिन। दुनू भाँइ रेलवे पर ओंघरा-ओंघरा क' कानि रहल छलाह। ओम्हर दुनू देयादिनी सेहो छाती पर दुहत्थड़ मारैत घ'ना क' रहल छलीह...। लछमी आब दुनू कैँ सम्हार' पर लागलि छलि...। बहुत कारुणिक दृश्य छलै...।

आब जखनकि स्थिति प्राय: स्पष्ट भ' चुकल छलै तँ त्वरित निर्णय लेब' मे माहिर लोक सभक विचार भेलनि जे एहि सँ पहिने कि थाना मे खबरि होइक आ गुंडा बैंकक मैसेन्जर जकाँ दारोगा सदल-बल आबि जुमय, दाह संस्कारक काज सम्पन्न क' लेल जाय...। एक बेर जँ लहास छाउर भ' गेल तँ फेर दारोगा की क' लेत? चलू आब जे भेलै से भेलै। शीघ्रता करै जाउ...।

फेर जल्दी-जल्दी मे लोक सभ लहासक टुकड़ी सभ कैँ बीछि-बीछि क' बोरा मे ठुँसलक...खाट पर लादि उठौलक...मटिया तेलक कंटर लेल गेल...बाड़ी-झाड़ी मे जे बाँस-राहठ भेटलै से उठबैत गेल...आ भागल श्मशान। आनन-फानन मे डेढ़-दू घंटा मे कनिञा काकी कैँ फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' देल गेलनि...। पँचकठिया फेंकलाक बाद कठियारी सभ बाधे-बाधे बढ़ल...खिरोइ दिस...धूर पकड़ने...आगाँ-पाछाँ...पंक्तिबद्ध। ''देखै जाइ जइह'। सम्हरिक'। दोसराक पयर पर पयर नहि लाग'। ...आ केओ गोटे घुरिक' तकिह' नहि। अकाल मृत्युक मामिला छै...नहि तँ अपनहि बझिह'...।'' बड़का कक्काक निर्देश कैँ सभ चुपचाप सुनि लेलक...। कुल्लम पन्द्रह गोटे तँ रहबे करी। दुनू भाँइ सरबन बाबू आ बाकी हम सभ तेरह गोटे। ककरो मुँह फोलबाक साहस नहि भ' रहल छलै...। जोश मे, संस्कार मे सम्मिलित होयबाक लेल, आबि तँ गेल छल लोक मुदा आब एक टा विशेष प्रकारक अदंक करेज कैँ दलकौने छलै...। सभ खेते-खेते धूर पकड़ने जा रहल छल...। सड़क पकड़बाक साहस नहि भ' रहल छलै। यदि पुलिस आबि गेल होइक तखन...? ओना नेता



जी सोझे मोटरसाइकिल सँ थाना भागल हेताह। सरबन बाबूक आग्रह पर भमरपुरा सँ सोगारथ यादव कैँ सेहो संग क' नेने हेथिन। एक नम्बरक खच्चड़ अछि चौकीदार। तुरंत साइकिल सँ थाना लेल विदा भ' गेल हैत। मुदा नेता जी तँ मोटर साइकिल सँ गेलाह अछि। ओ अबस्स पहिनहि पहुँचि गेल हेताह...। तथापि यावत् ओ घुरिक' नहि अओताह तावत् की कहल जाय...।

कतेक समय भेल रहल हेतै? बेसी-सँ-बेसी दस...। मुदा बरखाक बाद स्वच्छ भ' गेल अकास सँ एखनहि तिक्ख रौद बरस' लागल छलै। लागि रहल छलै जेना चानि चनकि जेतै...। सभ गोटे एक टा गाछी मे विलमि गेल। केओ ककरो सँ नजरि नहि मिला रहल छल...। वर्तमान प्रसंग पर केओ चर्च नहि करय चाहैत छल। अनर्थक भीषण विशिष्टता आ मात्रा कैँ सभ अटकारि रहल छल। दाह-संस्कारक गैर-कानूनी पक्षो कैँ सभ जानि रहल छल...। ''चलै जाह हौ। शीघ्रता करै जाह। आब सोझे खिरोइ पर!''

जेठक कड़कड़ायल रौद मे लहालोट भेलि खिरोइ पस्त पड़लि छलि...। धार कहाँ छलै...। एक तँ ओहिना प्रतिवर्ष बाढ़िक संग आयल बालू सँ भथैत-भथैत ओ उत्थर भ' गेल छलै। दोसर एहि साल एखन धरि ठीक सँ बरखा कहाँ भेल छलै...। पुलक दक्खिन एक टा पैघ सनक खाधि मे जे जल छलै सैह...बाकी कतहु जलक निशान नहि। खाली नामे टा धार...। रातुक बरखा सँ पेटी महक बालुका-राशि जँ भिजलो रहल हेतै तँ से आब एखन हालक नाम नहि। एखनहि बालु उड़ि रहल छलै...। भोरे जे महिसबार सभ महिस कैँ धोबाक क्रम मे खाधि महक जल कैँ घोंकने छल से एखनो साफ नहि भेल छलै। ...ओहिना घोर मट्ठा। ओही जल मे सभ गोटे नहाइत गेल...। कनिञा काकी कैँ तिलांजलि देलक...। पन्द्रह टा लोक तिल बहि देलक कनिञा काकीक...।

घुरैत काल हम बाट मे सोचैत रही...। की तिल बहबाक यैह अर्थ होइत छै? नजरिक समक्ष लोक तरसैत रहओ...तड़पैत रहओ...बेल तरक मारल बबूर तर जाइत रहओ...अनुचित अवांछित कलंक आ दंश सहैत रहओ...मुदा समय पर केओ कल्ला अलगाब'वला नहि...सभ अपना-अपना मे लिप्त आ जखन ओ टूटि जाय...टूटिक' छिड़िया जाय तँ ओकरा फूकि-फाकि क' सुड्डाह क' दियौ आ एक चुटकी तिल माथ पर ल' डुबकी द' दियौ...बस भ' गेलै तिल बहब...। तिल बहबाक अर्थ आर की होइत छैक?

कारी मड़र सूचना ल' क' आयल छल जे नेता जी आपस आबि गेलाह अछि। सभ टा मैनेज भ' गेलै...। चिन्ताक कोनो बात नहि...। सूचना द' ओ नरौछ लेल विदा भ' गेल...। महापात्र कैँ सेहो खबरि करबाक छलै ने! मैनेज भ' गेलै। माने ई जे आब कोनो डर नञि। निधोख गाम जायल जा सकैत छल। तथापि पता नहि किएक कठियारी लोकनिक समूह मूड़ी गोंतने सड़क धयने गाम दिस जा रहल छल। खेत मे काज करैत ज'न-बोनिहार सभ ठमकि क' पन्द्रहो पराक्रमी व्यक्तिक समूह कैँ देखि रहल छल...मुदा हमरा सभ मे सँ केओ एम्हर-ओम्हर देखय नहि चाहैत छल...। पता नहि के किछु पूछि देअय! रौद बड्ड तिक्ख भेल जा रहल छलै...। सबहक फेर चानि चनकय लागल छलै...। ओम्हर पता नहि किएक एक टा टिटही बड्ड व्याकुल स्वर मे टिटिया रहल छल...।

सरबन बाबूक आँगन मे राखल आगि-पानि-लोह-पाथर कैँ छुबैत काल देखल जे टोल भरिक स्त्रीगण सभ जमा छलीह आ दुनू देयादिनी ओंघरिया दैत चिकरि-चिकरि क' लयात्मक ढंगें कानि रहलि छलीह...जेना कोनो हृदयविदारक करुण गीत गाबि रहलि होथि...। गीतक प्रत्येक पाँति मे श्रद्धेया सासु माक विशिष्ट दुर्लभ गुण आ ताहि सँ आब सदाक लेल वंचित भ' जयबाक अफसोसक मर्मस्पर्शी वर्णन आरोह-अवरोहक संग भ' रहल छल...। कोनहु सहृदय कैँ द्रवित क' देबा मे समर्थ एहि रोदनाक यथेष्ट प्रभाव त्वरित-रुदन मे प्रवीण जनी-जाति सभ पर स्पष्ट गोचर भ' रहल छल...। ओ सभ कनितो छलीह आ दुनू देयादिनी कैँ भरोस तथा साहस रखबाक परामर्शो द' रहल छलीह...। सघन उदासी आ करुण स्वर कैँ अनुभव करैत कठियारी सभ आगि-पानि-लोह-पाथर छूलक...। कर्ता दुनू भाँइ कैँ छोड़ि सभ अपन-अपन आँगनक लेल विदा होइत गेल...।

नवारी दु:ख कि बुढ़ारी दु:ख...?

''जय हो...जय हो...महो-महो भ' गेलै...'' दही तेबारा परसल जा रहल अछि। जे चुक्की मारने छलाह से पलथी मारि लेलनि अछि आ जे पलथी



मारने छलाह से चुक्की मारि लेलनि अछि। आसन बदलि क' सभ दही सुड़कि रहल छथि...।

''अरे के खुअबैत अछि आइ-काल्हि, एतेक हृदय खोलिक'?''

''कनिञा काकी छलीह मुदा भागमंत!''

''आह! ताहू मे कोनो संदेह? एहन सपूत सभ कें जन्म देनिहार भागमंत नहि तँ आर की कहल जयतीह?''

''देखियनु पुण्यक प्रताप जे मर' सँ पहिने ककरो सेवा करबाक कष्टो देलथिन?''

''हँ यौ ठीके कहैत छी। एक तँ उत्तरायणक समय, दोसर मृत्यो कोना क्षण मे क्षणाक भेलनि। कोनो कष्टो तँ नहि भेलनि...।''

एक कात मे ठाढ़ हम चौंकि पड़ैत छी...। मोन होइत अछि जे किछु बाजी। मुदा, एखन बाजिक' लाभे की? आ ई टिप्पणी तँ मगन मोनक असहज टिप्पणी अछि। एहि पर प्रतिक्रिया की करब? आ कोन फूसि कहलकै? ठीके ने कहलकै...। की कष्ट भेल हेतनि...? दू सँ चारि मिनट मे सभ समाप्त...। नहि! हुनका कष्टे कहिया भेलनि? यदि भेलो होनि तँ ककरो कहलथिन नहि...। कहबो कयलथिन तँ कष्टक मादे नहि—निसाफ करय लेल...आ से...।

ओहि दिन अंत्येष्टि-संस्कार सँ घुरल रही। आँगनक मुँह पर माय भरि लोटा जल, नीमक पात आ ललका सुखायल मिरचाइ राखि देने रहय। मिरचाइ कें दाँत सँ काटि...थुकड़ि...नीमक पात चिबा जल सँ कुरुड़ कयलहुँ आ पयर धोलहुँ। चापाकल पर जाय फेर सँ स्नान कयलहुँ...। जाह! दतमनि तँ आइ करबे नहि कयलहुँ...। कखन करितहुँ? छोड़! कोन भोजन करबाक अछि? ककरा धँसतै? मायक करेज! ओ किछु खा लेबाक हठ करय लागलि रहय। ओकरा टारय लेल अनेरे कनेक कठोर होइत हमर कंठ अवरुद्ध भ' गेल रहय आ आँखि मे नोर सेहो ढबढबा गेल रहय...। कहुना ओ अपन हठ छोड़ि देलक। हमरा ककरो सँ गप्प करबाक मोन नहि होइत रहय। ...एहि मन:स्थिति मे जखन हम अपन कोठली मे आबि पड़ल रही तखन कनिञा काकीक एहि अनपेक्षित आ भीषण परिणति पर सोचैत-सोचैत लागि रहल छल जे माथ फाटि जायत...। ई होयबाक नहि चाहैत छलै...। काकी एतेक दुर्बल तँ नहि रहलीह कहियो...। किछु सुनल आ किछु देखल छल जे जिनगीक हिंसक आँखि मे आँखि गड़बैत कनिञा काकीक मुखाकृति पर कहियो संभावित पराजयक आशंकाक लेशो धरि नहि झलकल छलनि...। तखन ई काज? कहीं एहन तँ नहि...?

एतनी टा रहथिन कहाँदन जहिया व्यास कका बिआहि क' अनने रहथिन हुनका। हुनका सँ पैघ तँ जाउत-जइधी सभ छलथिन। साड़ी धरि नहि सम्हारि पबैत छलीह। बेर-बेर लटपटाक' खसि पड़थि। जाउते-जइधी सभ नाम देलकनि—कनिञा काकी। फेर तँ सभक ओ कनिञे काकी बनि गेलीह। नेनपन मे हमरा आश्चर्य लागय जे हम तँ हुनका कनिञा काकी कहिते छियनि हमर बाबूजी सेहो सैह कहैत छथिन। ई कोना भ' सकैत छै? ई तँ पछाति जा क' स्पष्ट भेल रहय जे वस्तुत: टोलक संबंधे ओ हमर बाबुए जीक काकी लगथिन। जें कि हमर घरक बगलवला आँगन मे ओ रहैत छलीह तें सभ कें कनिञा काकी कहैत देखि हमरो वैह कहबाक अभ्यास भ' गेल रहय। हमरे किऐ? देओर-भैंसुर कें छोड़िक' प्राय: सभ कें सैह अभ्यास भ' गेल छलनि...।'

दाइ (दादी) कहैत छलीह जे कनिञा काकी पाँच बहीन छलीह। भाइ एक्को टा नहि। दरिद्र पिता बड्ड स'ख सँ नाम रखने रहथिन, जानकी। ओ पाँचो बहिन मे सभ सँ पैघ छलीह। अपना पाछाँ चारि गोट बहिन कें ल' अनबाक दोखी छलीह। खिसिआयलि माय सदिखन दुरजरु कयने रहैत छलथिन, ''अलच्छी! केहन जरल भाग ल'क' आयल जे...।''

जानकीक जीवन-संघर्ष छठमे वर्ख मे प्रारंभ भ' गेल रहनि। पिता भोरे स्नानक बाद शालिग्राम पूजन क' निकलि जाइत छलथिन जजमानक गाम। वंशी चौक लग भीष्मक टोलक वासी श्यामानंद पुरोहित कें जजुआर गाम धरि नित्य पयरे जाय पड़ैत छलनि। हुनक दिनचर्या चारि बजे भोर सँ शुरू भ' जाइ छलनि...आ संगहि दिनचर्या शुरू भ' जाइ छलनि जानकीक...। भोरे उठिक' फूल लोढ़ब...पूजाक बासन माँजब...ठाँव करब...। आ तकर बाद मायक काज। रतुका अपैत-अँइठ बासन सभ माँजब...। घर-आँगन बहारब...चूल्हि नीपब...तरकारी काटब...चाउर बीछब...। एतेक भेलाक बाद माय तँ लागि जाइत छलथिन भानस-भात मे...एम्हर छोट-पैघ काज सभ जानकीए कें कर' पड़ैत छलनि—जेना इनार पर सँ जल भरि क' आनब...छोट-छोट बहिन सभ कें सम्हारब...। घरक लगे मे प्राइमरी स्कूल रहनि तथापि ओ कहियो स्कूलक मुँह नहि देखि पौलीह...।

जानकी कें दू गोटे सँ भरपूर सिनेह आ वात्सल्य भेटलनि...। एक तँ पिता बड्ड मानैत रहथिन। नाम रखने रहथिन जानकी, मुदा आवेशें कखनो वैदेही तँ कखनो मैथिली कहि सेहो सोर करथिन। दोसर गोटे छलथिन बड़की पितिआइन। गाम भरि मे कथकहिनी आ गितगाइनक रूप मे प्रसिद्ध। कनेक कड़गड़ सुभावक। मायो अपन एहि बड़की देयादिनी सँ कनेक डेराइत छलथिन। तें जानकी पर तनल बड़की काकीक स्नेह-सुरक्षा-क्षत्र कें देखि मोनहि मोन सुनगैत तँ बड्ड छलीह, मुदा प्रकटत: लहकि नहि पबैत छलीह। कनिञे काकीक मुँहें हम सुनने रही जे गीत गयबाक लूरि आ जितिया, सप्ता-विपता, बड़साइत, मधुश्रावणी आदिक कथा कहबाक आकर्षक-मोहक ढंग ओ अपन ओही बड़की काकी सँ सिखने रहथि...।

हुनका स्मरण नहि रहनि जे नेनपन मे कहियो कनिञा पुतरा, सतघरा वा कितकित खेलबाक अवसर भेटल होनि। जनमिते परिस्थितिक हाथें वयस्क बना देल गेल छलीह। धूआ बालिकाक आ मोन वयस्कक। प्राय: एगारह वर्खक रहल

हेतीह तँ पंचपुत्रीक पिता केँ हुनक बिआहक चिन्ता सवार भेलनि...। जजमान परमेश्वर ठाकुर लग चर्च कयलथिन तँ किछु दिनुका बाद ओ कहलथिन, ''मुरैठ मे हमर पिसियौतक टोल मे एक टा लड़का छै। दू भाइक भइयारी। पैघ भाइ विवाहित। छोट कुमार छै। कनेक पंडित प्रकृतिक अछि। सत्यनारायण पूजन, मूड़न, उपनयन, बिआह करा लैत अछि। देख'-सुन' मे बड्ड बेस। थोड़ेक जमीनो छै। यदि पसिन्न होअय तँ हम प्रयास करी। हम जनैत छी जे अहाँ केँ कैंचाक दिक्कति अछि। तँ चिन्ता नहि कयल जाओ। बिआह रातुक खर्चो देया देब...। श्रीविहीन संत्रस्त श्यामानंद पुरोहित केँ लागल रहनि जेना केओ थापड़ मारने होनि। मुदा निरुपाय ओ 'बेटी बेचना' कहयबाक संभावित कलंक केँ अवधारैत जानकीक बिआह क' देलथिन। आ एहि तरहेँ बालवधू बनि जानकी उर्फ कनिञा काकी एहि गाम मे अयलीह...।

मायक उमिरक जेठ देयादिनी आ सिनेही पतिक छत्रछाया मे कनिञा काकीक जीवनक ई नव अध्याय पहिलुके अध्याय जकाँ छलनि। फेर वैह कड़ाचूर मेहनतिक दिनचर्या...निरन्तर...। प्राय: बारह बर्खक बाद देयादिनी केँ लाग' लगलनि जे भीन होयब जरूरी छनि। हुनको सँ बेसी हुनक पुतोहु सभ केँ। निरन्तर कलहक परिणति अन्तत: भीन-भिनाउज मे भेलै। जेठ जन जेठांशक नाम पर नीक-नीक खेत-पथार सभ चुनि लेलथिन। कनिञा काकी छटपटा क' रहि गेलीह...। मुदा, पैघ भाय केँ पिताक आदर देनिहार धैर्यक धनी व्यास कका हुनका एतबे कहथि, ''अहाँ किछु नहि बाजू। भगवान पर भरोस राखू। सभ ठीक भ' जेतै।''

आर की कयलनि कनिञा काकी? अप्पन मेहनतिक अतिरिक्त भगवाने पर तँ भरोस कयलनि। कड़ाचूड़ मेहनति क' अपन गृहस्थी केँ सम्हारलनि। तीन साढ़े तीन बीघा जमीन... बाढ़िक मारल। उपजाक नाम पर नामे लेल अन्न...। कने-मने पड़िताइ सँ होइत पतिक आमदनी...। एहन स्थिति मे गृहस्थीक गाड़ी ससरब मोश्किल रहनि। किछु करब जरूरी छलनि। हारिक' लाज-धाक केँ ताख पर रखलनि ओ। बड़की काकी सँ सीखल विद्या काज देलकनि। अँगने-अँगने जाक' कथा-पिहानी कहब...गीत गायब...दनौरी, तिलौरी, चरौड़ी पाड़ि देब...अहिपन-पुरहर-कोबर लिखि देब...धान-गहूम फटकि-बना देब आदि-आदि काज सँ किछु आमदनी भ' जाइत छलनि...। गाड़ी कहुना क' ससर' लागल रहनि।

ओहि दिन कोठली मे पड़ल-पड़ल हमरा आँखिक आगाँ कथा कहैत कनिञा काकीक छवि नचैत रहल...। गोर दपदप छौंकी सन छरहर धूआ...छूरी सन पातर ठोर...कनेक भरल-भरल गाल...पैघ-पैघ किछु बजैत जीवन-रस सँ भरल आँखि...अँउठिया केस...कुल मिलाक' सोहनगर चेहरा...। हुनका कहियो हम लहक-चहक वला कपड़ा पहिरने नहि देखलियनि...। भ' सकैए कम उमिर मे पहिरने होथि। मुदा, हुनक जे पुरान-सँ-पुरान छवि हमर मानस मे अंकित अछि ओहि मे एक्को टा एहन नहि अछि जे ओ एकपढ़िया छोड़िक' कोनो दोसर साड़ी मे होथि...। जजमनिका मे कहियो काल पति केँ ढंगगर रंगीन साड़ी भेटि जाइन तँ पेटी मे जोगा क' सैंति लैत छलीह—ई सरबन बाबूक कनिञा लेल...ई राघव जीक कनिञा लेल...आ ई गुंजाक लेल...।

अप्पन इच्छा-अभिलाषा-लालसा केँ अनठियबैत दबवैत भोर सँ राति धरि अखंड मेहनति करैत ओ कोनो तरहेँ अपन घर केँ सम्हारैत रहलीह...पाइ-पाइ केँ जोड़ैत रहलीह ...आ संतान सभ केँ पढ़यबाक प्रयास करैत रहलीह। बड़का बी.ए. क' ट्रेनिंग कयलथिन आ हाइ स्कूल मे शिक्षक बनि गेलथिन। अध्यापन सँ बेसी प्रखंडक राजनीति मे रुचि लैत अनौपचारिक रूपेँ सक्रिय रहनिहार सरबन बाबू केँ आइ के नहि चिन्हैत छनि? छोटका राघव मुदा दिशा भटकि गेलथिन। हाइए स्कूल मे रहथि कि गामक गँजेड़ी सभक संपर्क मे आबि गेलाह। पढ़ाइ मे कम आ चिलम सँ एक बीत ऊँच धधरा उठाब' मे बेसी मोन लाग' लगलनि...। मैट्रिको नहि क' सकलथिन। एखन ठीकेदारी मे लागल रहैत छथिन। बेटी गुंजा बेस चंसगर रहथिन। फर्स्ट डिवीजन सँ सप्तम बोर्ड कयलथिन, तथापि बेटी रहथि। इच्छा रहितो पाँच किलोमीटर दूर कमतौल बालिका उच्च विद्यालय मे पढ़य नहि जा सकलीह...। आब तँ सासुरो बसना कतोक बर्ख भ' गेलनि...।

नहि जानि कनिञा काकी हमरा एतेक नीक किऐ लगैत छलीह? भ' सकैए हुनक वत्सल सुभाव हमरा अपना दिस टनैत होअय। खाहे कोनो आन कारण होइक, मुदा हमरा हुनका सँ पटैत खूब छल। हुनका सँ नहू-नहू स्वर मे कोनो लोकगीत वा कोनो कथा सुनब हमरा बड्ड नीक लगैत छल। एकर अतिरिक्त हुनक नेनपनक स्मृति हुनके मुँहें सुनैत हमरा लगैत छल जेना कोनो रहस्यमय प्रदेशक यात्रा क' रहल होइ...। एहन प्रसंग मे कखनो क' हुनक जीवन-संघर्ष आ वर्तमान मानसिक स्थितिक झलक सेहो भेटैत छल...। जेना-जेना धिया-पूता सभ पैघ भ' रहल छलनि...पढ़ि रहल छलनि... तेना-तेना हुनका लाग' लागल रहनि जे आब किछु बर्ख आर! तकर बाद सभ किछु ठीक भ' जायत। सबहक दिन फिरै छै। सभ दिन कतहु दुक्खे होइ? सप्ता-विप्ताक कथा मे सेहो रानी सँ पुछने रहथि देवी, ''नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख? दुःख तँ कोनहु हालति मे भोगहि पड़तहु। अपराध भेल छौक तोरा पति सँ। मुदा, तोहर आत्मा छौक शुद्ध। तेँ इच्छा पूछि रहल छियौक। बाज! नवारी दुःख लेबैं कि बुढ़ारी दुःख?'', देवीक प्रकोप सँ भयभीत रहितहुँ रानी बुधियारी सँ सोचैत विनम्र-चिंतित स्वर मे चयन कयने रहथि, ''नवारी दुःख तँ सहियो लेब मुदा बुढ़ारी दुःख तँ सहलो ने जायत।'' सप्ता-विप्ताक कथा मे रानी केँ तँ 'तथास्तु' केर आश्वस्ति भेटि गेल रहनि, मुदा कनिञा काकी केँ? ओ स्वयं कहैत छलीह, ''बौआ, हमरा लगैत रहय जे आब किछु बर्ख आर... जीवनक अभिशप्त दीर्घ कालखंड बीतय वला अछि...। मुदा, कहाँ जनैत रही जे कथा कथा छैक आ जीवन जीवन...। कहाँ जनैत रही जे बसात केँ मुट्ठी मे पकड़बाक प्रयास...!!''

सत्ते! कनिञा काकी कहाँ जनैत रहथि जे फसिल लगा क' संभावित उपजाक सपना देखैत मिथिलाक कृषक लोकनिक सपना जेना प्रतिवर्ष बाढ़ि मे बहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि, तहिना हुनको सपना मात्र सपने भ'क' रहि जयबाक लेल अभिशप्त छनि...। से जनितथि तँ जेठ पुत्र केँ शिक्षक बनैत आ छोट केँ पेट्टी कान्ट्रेक्टरक रूप मे आगाँ बढ़ैत देखि एक टा मृगतृष्णा मे नहि फँसितथि...।

पोता-पोती केँ तेल मालिश करैत...स्नान करबैत...सुग्गा कौर, मैना कौर खुअबैत...रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत ओ निरंतर मगन रह' लागल छलीह। आब तँ हुनका एक्के टा लालसा छलनि। बस...किछु दिन नीक जकाँ सुख भोगि ली...। आ तकर बाद सिऊँथ मे सेनुर नेने आँखि मूनि ली...। सुनिक' एक दिन कतेक कातर भ' उठल रहथिन व्यास कका...। जेना कोनो बच्चा केँ अपन माय सँ बिछुड़ि जयबाक आशंका त्रस्त क' देने होइक...।

प्राय: सत्तर वर्षक एहि बच्चा केँ की कहल जाय? दिन-राति जानकी-जानकी रटैत रहयवला ई बच्चा कोना रहि पाओत हमरा बिना? एगारह बर्खक उमेर सँ ओ देखैत आबि रहल छथि अपन एहि बच्चा केँ। दुनियादारी सँ प्राय: अनवगत ई बच्चा कथू लेल कहियो चिन्तित नहि भेल। किछु जरूरी होइक तँ जानकी! कतहु सँ घुरिक' आबय तँ जानकी! बड़की पुतोहु केँ बड्ड अनसोहाँत लगनि। बुढ़ारी मे कतहु लोक एतेक...। जानकी...जानकी...जानकी! वाह रे जानकी! कहलकै जे हम सुनरी कि पिया सुनरा गामक लोक बनरी-बनरा! पुतोहु केँ जे मोन

होनि से सोचथि आ बाजथि। मुदा, ओ स्वयं जनैत छथि जे प्राय: दसे बर्ख मे टुग्गर भ' गेल ई बच्चा पुन: टुग्गर भ' जयबाक आशंका सँ ग्रस्त अछि...। ओहि दिन पतिक भीतर सँ हुलकी दैत आ फेर सम्पूर्ण मुखाकृति पर पसरैत एक टा टुग्गर कातरता केँ देखि हुनका लागल रहनि जेना फेर सँ ब्लाउज भीजि गेल होइन आ एक टा दुधिया सुगंध पसरि गेल होइक...।

फेर कहियो व्यास कका लग ई बात बजबाक साहस नहि भेलनि...। आ एक दिन माघ मासक कुहेसल भोर मे व्यास कका अपनहि आँखि मूनि लेलथिन। हुनका आँखि मुनिते जेना कनिञा काकी अपना केँ कटाह एकाकीपनक हिमगीत चाँगुर मे फँसल अनुभव कयलनि। ओह! ओहि दिनुका हुनकर कानब...! तुलसी चौरा लग व्यास ककाक शव पर माथ पटकि-पटकि क', करेज फाड़ि कनैत कनिञा काकीक ओ छवि...।

एम्हर पतिक शव केँ लोक श्मशान ल' गेलनि आ ओम्हर ओ अचाँचके मौन भ' गेलीह...। जेना एकदम निस्पंद...जड! टोल-भरिक स्त्रीगण सभ जे-जे करबैत गेलथिन ओ करैत गेलीह। चूड़ी फोड़ि देल गेलनि...। मौन निर्विकार चेहरा नेने ओ सहयोग दैत गेलथिन...। फेर कोना-कोना अस्थि-संचय सँ ल'क' श्राद्ध धरिक ओरिआओन भेलै, काकी केँ किछु बूझल नहि भेलनि। दुनू भाँइ केँ जेना जे फुरयलनि... लोक सभ जेना जे परामर्श देलकनि...करैत गेलाह...।



खिड़की पर अँटकल मुंड...

''बौआ...बौआ! उठह ने हौ! कतेक सुतबह?'', माय हमर कोठलीक केबाड़ पीटि रहल छलि। हमरा लागल जेना कोनो यात्रा सँ घुरि क' आयल होइ। संभवत: माय बूझि रहल छलि जे बेटा सूतल अछि। ''चाह बना दिय?'', मायक एहि प्रश्नक उत्तर मे हम स्वीकृतिसूचक माथ डोलबैत...नहि जानि किएक माय सँ आँखि मिलयबा सँ बँचैत चापाकल दिस बढ़ि गेल रही...।

चाह पीबैत रही तँ माय कहने रहय, ''जाह! कने घूमि-फिरि आबह। मोन बहटि जेतह...।'' विदा तँ भ' गेल रही मुदा, कोम्हर जाइ से निर्णय बाधित छल। रेल लाइन दिस? नहि! खिरोइ दिस? नहि-नहि!! तखन टीसन? हँ चली...। टीसन पर चाहक दोकान पर लोक सभक चर्चक विषय वैह छल जाहि सँ हम बाँच' चाहैत छलहुँ...। हम ओत' सँ उठि अरुणक पानक दोकान लग जा ठाढ़ भ' गेलहुँ। हम नित्त जतेक भाँग खाइत रही ताहि सँ प्राय: तिगुना हमरा खाइत देखि अरुणक आँखि विस्मय सँ फाटि गेल रहै...। हम ओकरा दिस ध्याने नहि देलहुँ आ विदा भ' गेलहुँ बाध दिस। बौआइत रहलहुँ...बौआइत रहलहुँ... कहुना सम्पूर्ण प्रसंग केँ बिसरि जयबाक प्रयास करैत रहलहुँ...।

प्राय: साढ़े आठ बजे राति मे घर घुरलहुँ तँ मायक खोंचारैत प्रश्न सँ बचबाक एक्के टा उपाय छल जे चुपचाप दू-चारि टा सोहारी खाक' अपन ओछाओन ध'ली...। आइ फेर निन्न निपत्ता छल...। क्रमश: जेना-जेना राति बीति रहल छलै तेना-तेना निसबद्ध भेल जा रहल छलै...। दूर दछिनबारी टोल दिस सँ कुकुर सभक झौहटि सुनाइ पड़ि रहल छलै... मुदा एम्हर एकदम निस्तब्धता...। कुकुर सभ निपत्ता...जलमुर्गी मुँह सीने...कतहु कोनो चूलचाल नहि...। पशुपति एक्सप्रेस धड़धड़ायल पास क' गेल...फेर पुन: सन्नाटा...। अचानक लागल जेना हमर कोठलीक अगुअइत मे किछु खड़खड़ायल होअय...। कथी भ' सकैए? हेतै कथू। के आँखि खोलओ?...फेर लागल जेना खिड़की दिस किछु भरिआयल सन। आँखि खुजि गेल...। नजरि खिड़की दिस उठल...। खिड़की पर कनिञा काकी छलीह...। कनिञा काकी नहि, कनिञा काकीक मुंड...। धड़ निपत्ता...। खाली मुंड...। उपरका चारि टा दाँत निचला ठोर मे धँसल...भीजल केस माथ मे सटल...चँछायल रक्तहीन धोल-पखारल निष्प्रभ चेहरा...सोझे हमरा दिस तकैत आँखि...। उँह! भ्रम थिक। भाँगक यैह लच्छन ठीक नहि। एकभगाह क' दैत अछि। झुट्ठे। कहाँ क्यो अछि? अनठिया क' सुतबाक प्रयास कयलहुँ तँ अनुभव भेल जे हृदयक गति तेज भ' गेल अछि...धक् ...धक्!...भक्! हम डरबूक नहि छी। कहाँ केओ अछि...? हमर आँखि फक् सँ खुजल...खिड़की पर अँटकल मुँड हमरा ओहिना निहारि रहल छल...। एक बेर, दू बेर, कैक बेर यैह क्रम चलल...। पसेना-पसेना भ' गेलहुँ...। तरासे कंठ सुखा रहल छल...। चौकीक नीचाँ लोटा मे जल राखल छल...मुदा हिलबाक साहस...? आँखि मूनि चिचिअयबाक प्रयास कयलहुँ, ''माय...माय...!''

''बौआ...बौआ! की भेलह? डर होइत छह की?'', माय केबाड़ फोलि देलक। ई केबाड़ फोलि देलाक बाद मायक कोठली सँ हमर कोठली जुड़ि जाइत अछि। ओ हमर चौकी पर आबि बैसलि। माथ पर हाथ देलक। आँचर सँ हमर माथ पोछैत जल पिऔलक।

''की भेलह?''

''माय, खिड़की पर कनिञा काकी छलीह!''

''दुर् बताह! ओ बेचारी कथी लेल अओतीह? ई तोहर अपने मोनक डर छलह...। पहिने कहने छलियह भोर मे जे रेलवे दिस नहि जाह। तों अपना केँ जतेक नहि चिन्हैत छह ताहि सँ बेसी हम तोरा जनैत छिअह। ओ किऐ अओतीह बेचारी? एहि ठाम हुनक की छनि? जँ रहितनि तँ एना जयबे कैरतीह?''

पता नहि किएक हम ओहि क्षण बिसरि गेल रही जे आब प्राय: चौबीस बर्खक भ' चुकल छी...। मायक कोर मे मूड़ी गाड़ि ठोहि पाड़ि क' कनैत रहलहुँ...।

''चलह बौआ! आब सुतबाक प्रयास करह। बहुत राति भ' गेलै। अच्छा, कने घुसकह, हमहूँ एतहि पड़ि रहैत छी।''

हमरा माय सँ अपन कोठली मे जाक' सूति रहबाक आग्रह करबाक साहस नहि भेल। हम गुबदी मारि लेलहुँ...। हमरा सूतल जानि नहू...नहू माय फोंफ काटय लागलि...। आ एम्हर हम सोचैत रही...माय कहैत अछि जे ओ हमरा हमरो सँ बेसी जनैत अछि। की सबहक माय अपन संतान केँ एहिना जनैत हेथिन? की कनिञा काकी अपन बेटा सभ केँ एहिना जनैत रहथि...?

निरर्थक योजक-चिह्न...

ओहि दिन व्यास ककाक त्रयोदशा रहनि। प्राय: दस-एगारह बाजि रहल हेतै। कनिञा काकी अपन कोठली मे पड़ल-पड़ल आब सदाक लेल अनुपस्थित भ' चुकल पतिक विगत स्मृति केँ सहेजबा मे लागल रहथि कि आँगन मे हल्ला भेलै...। दुनू पुतोहु आपस मे लड़ि रहल छलथिन। पहिने ओ लोकनि एक दोसरा केँ हीन प्रमाणित कयलनि...। फेर एक दोसराक नैहर केँ गर्हित घोषित कयलनि...। संतोष नहि भेलनि तँ एक-दोसराक भाय-बाप केँ चिबा जयबाक धमकी देलनि...। तथापि किछु कसरि रहि जयबाक संदेह भेलनि तँ एक-दोसराक अंग-विशेष केँ खच्चारि केँ अँचार भरि देबाक दावा ठोकय लगलनि...।

ऐन एही अवसर पर सरबन बाबू आ राघव ललाक प्रवेश एहि लंका कांड मे भेलनि। ओहो दुनू गोटे परस्पर वाचिक आक्रमणक क्रम मे ई बिसरैत चलि गेलाह जे एक-दोसराक सहोदर छथि...। तामसक आधिक्य मे समक्ष ठाढ़ शत्रु कें अगम्यागमनक आरोपी घोषित करैत एक टा हिंसक संतुष्टि सँ तृप्त होइत गेलाह...। कलह बढ़ैत गेलै... बढ़ैत गेलै। नौबति मारि-पीटि धरि पहुँचि गेलै...। ई तँ रच्छ रहलै जे हल्ला सुनि किछु लोक आँगन मे जुटि गेलाह आ दुनू भाँइ कें अलग कयल गेलनि। तथापि दुनू देयादिनी अपन नेनपन सँ ल'क' आइ धरि सिखलाहा गारि सभक बरखा करिते रहलीह...।

झगड़ा तँ कहुना शांत भेल, मुदा लोक सभ कारण जानि क' चकित छलाह। एतेक साधारण बात लेल एतेक झगड़ा? त्रयोदशा होयबाक कारणें आइ राति घर मे माछ वा माउस बनब स्वाभाविके छलै। मुदा माछ आनल जाय वा माउस, से निर्णय नहि भ' पाबि रहल छलै। सरबन बाबूक सार कें माछ बेसी नीक लगैत छलनि तँ राघव ललाक ससुर कें माउस। मामिला एतहि ओझरा गेलै आ बतकुच्चनि होइत-होइत एत' धरि पहुँचि गेल रहै...। आब तँ दुनू भाँइ अड़ि गेलाह जे चूल्हि साझी रहि नहि सकैए...। आइए आ एखनहि बाँट-चूट भ' जाय।

एहन कलह कोनो नव बात नहि छलै। पहिनहुँ कतोक बेर दुनू भाँइ टकरा चुकल छलाह। दुनू कें एक-दोसराक नेत पर शंका छलनि। दुनू कें होनि जे दोसर महाबेइमान अछि। एम्हर हम घर लेल खटैत-खटैत मरि रहल छी आ ओम्हर ओ चोरा-चोरा क' पाइ जमा करैत अछि। एहि शंकाक आगि कें लहकयबाक काज दुनू देयादिनी समय-समय पर बड्ड योग्यतापूर्वक करैत आबि रहल छलथिन...। मुदा आइ, आइ तँ हद भ' गेलै। कदाचित दुनू पक्ष एहि दिनक प्रतीक्षा मे छल। कनिञा काकी अपन परिवार मे होइत एहि घिनाउन विस्फोट कें टुकुर-टुकुर देखैत रहलीह आ सोचैत रहलीह जे की हमर खून मे एतेक स्वार्थ भरल छल...।

ओहि दिन तँ बूढ़-पुरान सभ जेना-तेना बुझा-सुझा क' दुनू पक्ष कें शांत कयलनि, परंच भानस एक ठाम नहि भेलै। दुनू घर मे लोक सभ अपन-अपन इच्छानुसार भोजन बनौलनि। एम्हर रहि गेलीह माय। तँ ओहि दिन दुनू भाँइ जेना मातृ-भक्तिक आदर्श प्रस्तुत करय लेल तत्पर रहथि। पुतोहु सभ तँ आओर आगाँ-पाछाँ, ''मा! ई एक बेर कहथुन तँ जे की खाय के मोन होइत छनि? ई निश्चिन्त रहथु मा! एकदम अमनिञा रहतनि। कनिको संदेह नञि करथु। ई जे कहथिन से बना देबनि। सेबैयक खीर बना दियनु? आकि मखानक? रसगुल्ला मँगा दियनु...?'' तात्पर्य ई जे एक टा सद्य: विधवा जे-जे वस्तु खा सकैत अछि वा जे-जे उपलब्ध भ' सकैत छलै, सबहक नाम गना देल गेलै...। मुदा कनिञा काकीक एक्के रट, ''नहि बौआ! नहि कनिञा! हमरा भूख नहि अछि।'' ओ तँ यैह नहि बूझि पाबि रहल छलीह जे जाहि आँगन मे आइ एते अट्ठाबज्जर खसल होइक ओत' ककरो कंठ मे किछु कोना धँसि सकैत छै?

दोसर दिन भोरे अधिकांश पाहुन विदा भ' गेल रहथिन। टोलक दू-चारि टा लोक आ एक-दू टा पाहुन कें ल' दुनू भाँइ दलान पर श्राद्धक खर्चक हिसाब-किताब करय लेल बैसलाह। मामिला फेर ओझराय लगलै। ओझराइत-ओझराइत पहिने गारिक अध्याय चललै...फेर लाठी चलबाक नौबति आबि गेलै...। आब एहन स्थिति देखि लोको सभ बाँट-चूट कइए देब उचित बुझलनि। ओहि दिन तँ नहि, मुदा दोसर दिन पंच सभ जुटलाह आ भीन-भिनाउजक प्रक्रिया प्रारंभ भेल। प्राय: सभ चल-अचल संपत्तिक बखरा लागि गेलाक उपरान्त एक टा एहन वस्तु बाँचि गेलै जकरा बाँटब असंभव छलै...। ओ वस्तु चक्कू, टेंगाड़ी, कुड़हरि वा आरी माने कोनो प्रकारक हथियार सँ काटिक' वा तराजू सँ जोखि कें बाँटल नहि जा सकैत छलै। आखिर ओहि वस्तु कें बाँटल जाय तँ कोना बाँटल जाय? दोसर, दुनू भाँइ मे सँ कोनो ओहि वस्तु कें बाँटय नहि चाहैत छलाह। दुनूक इच्छा रहनि जे दोसर गोटे अपन दावा छोड़ि देअय आ ई पूराक पूरा हमरे भेटि जाय...। ओ वस्तु छलीह कनिञा काकी!

पंच लोकनि चकित छलाह! वाह रे मातृभक्ति!! आइ काल्हि एहन मातृभक्त कत' देखाइ पड़ैत अछि? पुतोहुक तँ बाते छोड़ि देल जाय। पुत्रो सभ मे एहन मातृभक्ति दुर्लभ भ' गेल अछि। बड्ड भागमंत छथि एहन माय। ठीके, व्यास जी बड्ड सोचि कें नाम रखने हेताह अपन दुनू पुत्रक। नामक प्रभाव किछु ने किछु तँ पड़िते छै ने...वाह!

अंतत: पंचलोकनि दुनू भाँइ कें एक दोसराक मातृभक्ति कें सम्मान देबाक उपदेश दैत एहि बात पर राजी क' लेलनि जे ओ सभ 'पार' लगा लेथि। एक-एक सप्ताहक पार। माने ई जे कनिञा काकी बेरा-बेरी सप्ताह भरिक लेल दुनू परिवार रहल करतीह आ बेटा-पुतोहु कें सेवाक अवसर दैत रहतीह। की? कनिञा काकी? कोनो आपत्ति तँ नहि? ओ की बजितथि? किछु बाजय लेल एक टा निष्कर्ष पर पहुँचब जरूरी छलनि। हुनक माथ पर चकरघिन्नी भेल छलनि...। ओ बूझि नहि पाबि रहल छलीह जे विगत दस-बारह बर्खक कालखंड मे बेटा-पुतोहुक व्यक्तित्वक जाहि अनपेक्षित पक्ष सँ ओ नहू-नहू परिचित भेलीह अछि ताहि सँ आजुक पक्षक सामंजस्य कोना बैसाबथि? ओ टुकुर-टुकुर तकैत रहलीह...। दुनू ठोर सटल रहलनि...। हुनक चुप्पी कें स्वीकृति बूझल गेल...।

'पार' ओही दिन सँ प्रारंभ भेलै। पहिल पार भेटलनि जेठ पुत्र सरबन बाबू कें, हुनके इच्छाक आदार करैत। ई घोषणा करैत पंचलोकनि पंचैती समेटबाक लेल उद्यत होइते रहथि कि आँगन दिस हल्ला उठलै...। हल्लाक केन्द्र पर नजरि पड़िते सभ स्तब्ध रहि गेलाह...। माँझ आँगन मे दुनू देयादिनी परस्पर भिड़ल छलीह...। असल मे भेलै ई जे पारक घोषणा होइतहि जेठ-जनी दुरुखाक केबाड़क पाछाँ सँ चूड़ी खनका क' सरबन बाबू कें इशारा कयलथिन। ओ लग गेलाह तँ देखलनि जे पत्नीक हाथ मे मायवला पुरना टिनही बाकस छनि। हुनके दिया कनिञा काकी कें अपन घर चलबाक समाद अगुतायल-हड़बड़ायल स्वर मे देलथिन जेठ जनी। समाद सुनियो क' कनिञा काकी 'की-करी, की-नहि'क सोच मे पड़ल रहलीह...। संपूर्ण घटनाक्रम हुनका लेल भीषण बेदनादायी छलनि...। एहि विखंडन कें रोकबाक कोनो बाट नहि सूझि रहल छलनि। आब विखंडन कें रोकबाक कोन कथा? ओ तँ भ' चुकल रहै। संपूर्ण वीभत्सताक संग! ओ स्वयं की करथि? कि एतबहि मे आँगन मे अनघोल मचल...।

प्रतिद्वन्द्वी देयादिनी जकाँ छोट जनीक सेहो नजरि प्रत्येक घटनाक्रम पर आ कान प्रत्येक स्वर पर रहनि। जेठजनी दुरुखाक केबाड़ लग सन्नद्ध छलीह छोट जनी दलानक कोठलीक खिड़की लग तत्पर! पारक घोषणा होइतहि छोटजनी जेठजनी कें लपकि क' सासुक कोठली मे जाइत...सासुवला टिनही बाकस ल'क' धड़फड़ाइत दुरुखाक केबाड़ लग अबैत...चूड़ी खनकबैत...आ पति कें किछु फुसफुसा क' कहैत देखलनि। निमिष मात्र मे ओ सभ बात बुझि गेलीह... 'गै दाइ! ई बात छैक? फुर्ती ने देखियौ! इह! लगैए हम छोड़ि देबै। आँखि आगाँ अपन आशा-अभिलाषाक अपहरण देखि जे चुप रहि जाय से एक बापक बेटी नहि।' ओ झपट्टा मारिक' बाकस कें ध' लेलनि। छीना-झपटी मे दुनू देयादिनी असंतुलित भ' दुआरि पर सँ आँगन मे खसलीह। चोट भरपूर लगलनि...। पंच सभक नजरि जखन पड़ल रहनि तखन दुनू गोटे बाकसक कड़ी कें पकड़ने अपना-अपना दिस घीचि लेबाक प्रयास क' रहल छलीह...। संगहि वाक्-युद्ध चालू छल...निरंतर। एक-दोसराक बेटा, घरवला, भाय, बाप सभ कें सोझे गीड़ि जयबाक

धमकी देल जा रहल छल...।

अवाक् कनिञा काकी दुनू पुतोहु आ हुनका सभक मध्य योजक चिह्न जकाँ वर्तमान संदर्भ बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह...।

पंच सभ दुनू देयादिनी केँ डाँटिक' फराक कयलनि आ बाकस केँ सबहक मध्य मे आनल गेल। कोन रहस्य छै एहि बाकस मे? किऐ दुनू देयादिनी एहि बाकस केँ हथियाब' लेल एतेक आफन तोड़ने छथि? ई बाकस तँ कनिञा काकीक दुरगमनिञा बाकस छनि जे हुनक बाबूजी बड्ड सख सँ देने रहथिन। तहिया जेहन रहल हो, मुदा आब तँ भ' गेल अछि पुरान... बिझायल...प्राय: जर्जर सन...। ताहि लेल एतेक तमाशा।

असल मे, दुनू बेटा-पुतोहुक मोन मे एक टा अद्‌भूत आशा बहुत दिन सँ सुगबुगा रहल छलनि...। ई सभ जनैत अछि जे ओ सभ दिन मितव्ययी रहलीह अछि...। कहियो हाथ खोलिक' खर्च नहि कयलनि। तखन तँ ओ अवश्य किछु-ने-किछु जमा करैत हेतीह। हुनका पास अवश्य कोसलिया हेतनि। एहन गुम्मी छथि जे बेटा-पुतोहु केँ हवा लागय देतीह...। जरूर बेटी लेल जोगाक' रखने हेतीह...। ओहो जे गुंजा अछि ने से माये जकाँ गहींर अछि...। मुदा ताहि सँ की? छोड़बनि थोड़े। आ गहना? भला गहना छोड़ल जाय?

राघव लला आ हुनक पत्नी केँ आशा छलनि जे जेंकि राघव छोट बेटा छथि तेँ मायक कोसलिया आ गहना पर हुनके सभक अधिकार छनि। ओम्हर सरबन बाबू दुनू व्यक्तिक सोचब छलनि जे एक तँ ओ जेठ छथि, दोसर आइयो माय सरबने बाबू केँ 'बौआ' कहैत छथिन तँ स्वाभाविके हुनक अधिकार बेसी मजगूत छनि। मुदा, दुनू पक्ष मे सँ कोनो एहि मादे प्रकटत: चर्च नहि क' रहल छल। दुनू पक्षक कान पर एहि आशंकाक उल्लू बैसल छलै जे जँ बात खुजि गेल तँ दोसर पक्ष अपन हिस्सा ने माँगि लेअय! चतुर कुटनीतिक जकाँ प्रयास कयल जा रहल छल जे अपार मातृभक्तिक प्रदर्शनक बलेँ माय केँ अपना संग राखि लेल जाय...। एक बेर माय अपन पक्ष मे, अपन हिस्सा मे आबि गेलीह तँ बाकसो अपनहि आबि जायत...। एहि लेल दुनू पक्ष साकांक्ष, सतर्क आ सन्नद्ध छल...। जखन खिड़की लग ठाढ़ि छोटजनी देखलनि जे दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि जेठजनी की क' रहल छथि तँ ओ जेना सेन्हे पर चोर केँ पकड़ि लेबाक अंदाज मे झपट्टा मारलनि आ पतिक कान फूकि पहिल पार अपन माथे सहर्ष स्वीकार करबाक चलल चालि खाली जाइत देखि जेठजनी पर खिसिया क' रहि गेल रहथि...।

पंच लोकनि कनिञा काकी सँ कुँजी ल' बाकस केँ फोललनि। ताहि खन कनिञा काकीक चेहरा मारकीन जकाँ मलिन-मटियौन भ' गेल छलनि...नीरक्त...निर्भाव...निष्प्रभ! आँखिक चारूकात असंख्य बादुर उड़ैत...कनपट्टी पर गिरगिट चलैत...। बाकस मे सँ बहार भेलै...दू-तीन टा पुरान साड़ी...सेनुरक एक टा गद्दी जे कदाचित साड़ी मे सन्हिआयल रहि गेल रहै...। व्यास ककाक एक टा पुरान मैलछौंह फोटो, खादीक एक टा पुरान दुहत्ती चद्दरि...आ एक जोड़ा पुरना खराम जे मृत्यु सँ पूर्व व्यास कका पहिरैत रहथि...बस्स! दुनू देयादिनी केँ विश्वास नहि भेलनि। दुरुखाक मुँह लग ठाढ़ि ओ लोकनि पहिने नहू स्वर मे फेर जोर सँ निर्देश देलथिन जे बाकस केँ उनटि-पुनटि क' देखल जाय। मौलायल आस नेने दुनू भाँइ सेहो एहि बात पर जोर देलनि। पंच मे सँ एक गोटे ईहो क' के देखा देलथिन। किछु नहि खसलै! सभ टा वस्तु ओही मे राखि क' ताला लगा बाकस कनिञा काकी लग राखि देल गेलनि। कुँजी सेहो हुनके द' देल गेलनि। एक टा पंच आग्रह करैत कहलथिन, ''जाउ सरबन बाबू, आब माय केँ ल' जइयनु।'' हताश सरबन बाबू मरल मोन सँ बाकस उठा माय केँ ल' क' आँगन गेलाह।

''ई जंजाल किऐ उठा क' ल' अनलहुँ। फेंकि दितियै डबरा मे वा द' दितियै ओकरे सभ केँ जकरा सभक करेज फटैत छलै एहि लेल।'' आँगन मे ठाढ़ि पत्नी हुनका डाँटय लगलथिन। ओ कनेक थकमका गेलाह। ओम्हर छोट जनी केँ ई बात खबखबा केँ लगलनि। ई राँड़ी की बुझैत अछि? ओ खौंराक बेटी अछि तँ हमहू जलबारक बेटी छी। घुमा-फिराक' कूट करत तँ हम नञि बूझबै? आ हम छोड़ि देबै की?

''हमर सभक करेज किऐ फाटत? फटतै ओक्कर सभक जकरा अपन बेटाक सराध लेल ढेउआक कमी होइ आ जे निर्लज्ज जकाँ बाकस चोराक' भागय।''

एहि जोरगर आक्रमण सँ जेठजनी छिलमिला गेलीह। ओ आँचर उठाक' सूर्य दिस तकैत बजलीह, ''हे दिनकर दिनानाथ! जनिह' तोंही...। जरल उगै छह...जरल डुबै छह...। धोंछी सभ हमर बेटा केँ नजरि पर चढ़ौने रहैए...। तोंही निसाफ करिह'। हे नाथ! गुँहखौंकी सभ केँ मुँह मे खदखद पिलुआ फरबिह' हे दिनानाथ!''

आब तँ छोटजनी केँ सनसना केँ लगलनि। एहन घिनौन आक्रमण! नञि। आब अप्रत्यक्ष आक्रमण सँ काज नहि चलत। प्रत्यक्ष आक्रमण बेसी चोटगर, ''हमरा किऐ पिलुआ फरत? फरतौ तोरा सभ केँ। तोहर बेटा केँ...तोहर चाँद सन घरवला केँ...भाय केँ...बाप केँ...आ सेहो नेडरिया पिलुआ...।''

एवंप्रकारेँ प्रत्यक्ष आक्रमणक क्रम चलैत रहल...चलैत रहल...।

अपूर्ण आशाक साइड इफेक्ट...

आ ओही दिन सँ शुरू भ' गेलनि कनिञा काकीक जीवनक एक टा नवीन क्रम...। कड़ाचूर मेहनतिक क्रम...। ओना तँ ओ अपनहि बैस क' खायवाली कहियो नहि रहलीह, मुदा आबक कथा किछु आने छलै...। जाहि बेटाक पार मे ओ रहथि, घरक कोन काज नहि करथि? चाउर बिछब, चिक्कस चालब, घर-आँगन बहारब, बच्चा सभ केँ सम्हारब...माने ई जे कोनो-ने-कोनो काज मे लागले रहैत छलीह...। तैयो जँ केओ कमी निकालि-निकालि क' फज्झति कर' पर तुलल रहय तँ की कयल जाय? दुनू पुतोहु अपन-अपन पार मे हुनका पर क्षुब्ध रहैत छलथिन। हुनका सभ केँ शंका नहि विश्वास छलनि जे ओ महाबेइमान छथि...नमक हराम छथि। जेठजनीक पार मे छोटजनीक दुआरि पर बैसि जायब वा हुनक बच्चा केँ दुलारब तथा छोटजनीक पार मे जेठजनी सँ बतिआयब वा हुनक कोनो सौदा दोकान सँ आनि देब कनिञा काकीक बेइमानी मे गनल जाइत छलनि...। रहरहाँ घुमा-फिराक' व्यंग्य तँ कयले जाइत छलनि जे ओ अपन सभ टा कोसलिया बेटी केँ द' देलनि...। एहन अवसर पर बेटी आ नातिक लेल होइत गारि-सरापक बरखा हुनक आत्मा केँ हेहरु क' दैत छलनि...। उनटि क' उत्तर देब वा आपत्ति करब हुनक स्वभाव कहियो नञि रहलनि। मोनहि मोन कूही होइत ओ एतबे सोचथि जे ओइ बेचारीक कोन दोख? ओ तँ अपनहि दैवक डाँग सँ थकुचायलि अछि। एकमात्र बारह बर्खक बेटा केँ कहुना क' पोसैत ओ कतेक कष्ट सँ जीवन बिता रहल अछि, से कोनो नुकायल छै? केकरा नञि बूझल छै? तैयो एतेक गारि-सराप।

जखन कखनो गुंजाक मादे सोचैत छलीह कनिञा काकी तँ लगैत छलनि जेना केओ करेज केँ पकड़ि क' निचोड़ि दैत होनि...। कतेक दुलारू रहय बापक! पतिक आगाँ बेटी केँ डाँटय के कहियो हिम्मति नहि भेलनि हुनका। से आइ...। कखनो क' अपन बेटी पर गर्व सेहो होइत छलनि। लगैत छलनि जे बेटी हुनको सँ बेसी साहसी छनि। अपना नवारी मे लाख कष्ट रहल होनि...कम-सँ-कम सिनेही पतिक छाँह तँ उपलब्ध रहनि...आ गुंजा केँ?

ककर भाग मे की लिखल रहैत छै, से के जनैए? जहिया व्यास कका बेटीक लेल वर देखि क' आयल रहथि तहिया कनिञा काकी केँ बड्ड संतोष भेल रहनि जे बेटी मात्र पौने कोस दूर

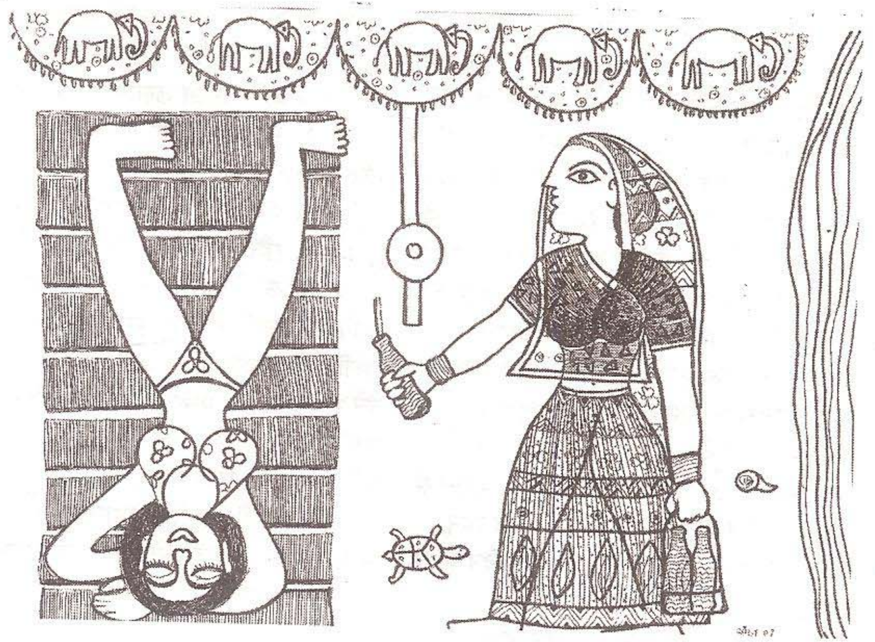
रहत। एहि गाम सँ पूब थोड़ेक दूरी पर खिरोइ आ तकर बाद ढढ़िया...। ढढ़ियाक पंडित उमाधर झा केँ के नहि चिन्हैत छनि? परोपट्टा मे नामी...प्रसिद्ध वैदिक! तिनक पोता। गोर नार चकैठ सन धूआ। बी.ए. पास। की हेतै जे एखन कोनो नोकरी नहि भेलनि अछि? तत्काल उत्साहपूर्वक खेतिए मे लागल। संगहि गामक सार्वजनिक काज सभ मे आगाँ-आगाँ रहनिहार दुस्साहसी युवक। के जनैत रहय जे यैह दुस्साहस काल भ' जेतै।

सतासीक चढ़ल बाढ़ि मे लगनमा पुल लग खिरोइक उफनैत धार मे हेलबाक दुस्साहस ढढ़ियाक तीन टा नवयुवक केँ गीड़ि गेल रहै...। ओही मे ओहो रहथि। सात दिनुका बाद जखन पानि उतरल रहै तँ कोस भरि दूर ततैला लग बबूरक झोंझ मे ओझरायल लहास भेटल रहै...फूलल-फूलल...किछु-किछु सड़ल सन। कहुना क' संस्कार कयल गेल रहै। एहीक संग गुंजाक सभ टा स'ख-मनोरथ जेना बाढ़िक संग बहि गेल रहै...। आब तँ कहुना क' बेटाक लेल जीबाक छलै...। से बस संघर्ष करैत जीबि रहल अछि...।

गुंजा केँ बड्ड प्रेम आ भरोस छलै अपन भाय सभ पर। भाय सबहक विरुद्ध ओ किछु सुन' लेल तैयार नहि रहल कहियो। नेनपनो मे झगड़ा भेला पर यदि कोनो संगी ओकरा भायक गारि पढ़ि दैक तँ ओ किटकिटा क' संगीक मुँह नोंचि लेअय। आर जे गारि देबाक हो से दे, मुदा यदि हमर भाय सभ केँ किछु कहबेँ तँ छोड़बौ नञि, से बूझि ले। भायक प्रति ई प्रेम बिआहक बादो बनल रहलै। तेँ ने ओ सभ साल दुर्गापूजा मे जे नैहर आबय तँ भरदुतिया मे भाय सभ केँ बड्ड सिनेह सँ नोतैत छलि...आ टोलक छोट-पैघ बेटी-धी सभ केँ प्रेरित करैत भरपूर ओरिआओन सँ सामा-चकेबा खेलैत छलि। कतेक विश्वास छलकै छलै ओकर आत्मा सँ जखन ओ बेस टहंकार सँ गबैत छलि—

गाम के अधिकारी अहाँ सरबन भैया यौ
अहाँ राघव भैया यौ
भैया गोठ चढ़ि पोखरि खुना दिय'
चम्पा फूल लगा दिय' यौ...।

मुदा, कहाँ सुनि सकलथिन भाइ सभ बहिनक करुण हाक केँ। बहिनोइक श्राद्ध मे जे दुनू भाँइ नोत पूरि क' अयलाह, से जेना तकर बाद ढढ़ियाक बाटे बिसरि गेलाह...। राजनीतिक काज सँ बौआइत सरबन बाबूक लिस्ट मे ढढ़ियाक नामे नहि छलनि आ राघव लला, तँ सहजहि एक टा अलगे दुनिया मे मस्त रहैत छलाह। अभावग्रस्त गुंजा एक बेर पूसी पूर्णिमाक अवसर पर गौतम कुंडक मेला मे माय सँ भेट क' कय कहने रहनि जे भैया सभ



केँ कनी मदति करय लेल कहिअहुन...। मुदा भैया सभ तँ सुनिते मातर अपन-अपन रोदना ततेक ने पसारि बैसलथिन जे मायक मुँहक बात मुँहे मे रहि गेल रहनि...।

तैयो गुंजा साहस नञि छोड़ने अछि...। की भेलै जे नैहर आयब छोड़ि देने अछि? बापोक श्राद्ध मे नहि आयलि...। खूब जनैत छथि ओ अपन बेटी केँ। अपन दुर्दशा माय केँ देखाब' नहि चाहैत अछि...। जो गै बेटी! हम अपन अभागक अतिरिक्त तोरा किछु नहि द' सकलियौ...। यदि हमरा पास किछु रहैत तँ तोरा एना बेलल्ला नहि होब' दितियौ...।

आ एम्हर बेटा पुतोहु केँ होइत छनि जे बेइमान बुढ़िया सभ किछु बेटी केँ द' देलक...। सभ किछु? कथी-कथी? स्वार्थक आवेग मे हुनका लोकनि केँ एतबो स्मरण नहि रहैत छनि जे हमरा पास रहबे की करय? गहनाक नाम पर मायक देल एक जोड़ी माकड़ी। ओहि मे सँ एक टा केँ तोड़बा क' बड़कीक बेटा केँ हनुमानी बनवा देलथिन तँ दोसर पर नजरि गड़ि गेल रहनि छोटकीक। ओहि सँ ओ बाली बनवा लेलनि। रहल टका! तँ यदि से रहैत तखन यैह दुर्दशा रहैत हमर आ हमर बेटीक...?

सोचैत-सोचैत कनिञा काकी अपन विगतजीवनक छानबीन करय लगैत छलीह...। कत' गलती भ' गेलनि? कत' चूकि गेलीह? जे किछु जहिया आमदनी होइत छलनि तकर पाइ-पाइ ओ परिवार केँ बनाब' मे खर्च करैत रहलीह...। सख-सधोरि केँ कोठीक कन्हा पर रखने छलीह...। तीर्थ यात्रा ककरा कहैत छै ओ कहियो नहि जानि सकलीह। बड्ड भेलनि तँ गौतम कुंड, अहिल्या स्थान वा बेसी-सँ-बेसी गंडेसर... पयरे...दर्शन-पूजा क' बिनु कैंचा खर्च कयने आपस...। सदा एक्के टा लक्ष्य! धिया-पुता सम्हरि जाय...मनुक्ख बनि जाय...आर की? कत' कसरि रहि गेलनि प्रयास मे? सत्य कही तँ ओ यदि कमी कयबो कयलनि तँ बेटिए संग...। ओहन चंसगर बेटी! कतेक इच्छा रहै ओकरा पढ़बाक। मुदा कोना जाय दितथिन कमतौल...। पाँच किलोमीटर दूर...केओ संगी नहि, बेटी जाति... ओह! यदि ओ पढ़ि-लिखि गेल रहितनि तँ आइ...। दुनू बेटाक बिआह बड्ड स'ख सँ कयने रहथि। कहाँ जनैत रहथि जे बिआहक लेल प्रस्थान करैत बेटा सभ केँ परिछनक उपरान्त परम्परानुसार जे छाती सँ लगौतीह से जेना माय सँ बेटाक विमुखताक प्रस्थान-पर्व सिद्ध हेतनि...। अपना जनतबे पुतोहु सभ केँ कोनो कम सिनेह देलथिन? दुनू पुतोहु केँ हुलास सँ नव-नव नाम देने रहथिन—हीरा सुन्नरि आ फूल सुन्नरि। जेना आन-आन सासु लोकनि करैत जाइत छथि तेना ओ कहियो पुतोहु सभ केँ कसिक' नहि रखलथिन। टोलेक देयादिनी छलथिन 'अरेरवाली बहिन'। ओ कहबो करथिन, ''कनिञा एना ढील देबै तँ पछतायब। कहबी छै, हल्लुक सवार घोड़ा फउद मारैए।'' परंच एहन अवसर पर कनिञा काकी खाली हँसि क' रहि जाथि। कहियो भारी सवार होयबाक प्रयत्न नहि कयलनि। किछु-ने-किछु हेर-फेर क' कोसलिया जमा करबाक लुतुक रहैत छनि स्त्रीगण मे। कोनो-कोनो चतुरी सँ चुपचाप लहनो लगबैत छथि। मुदा ओ कहियो एहि दिशा मे सोचबो नहि कयलनि...। ककरा सँ चोर 'बितथि? आ आइ हुनका पर आरोप मढ़ल

जाइत छनि...। आरोप नहि जेना कलंकक टीका...। अपन हाड़-हाड़ निकलल देह केँ निहारैत हुनका लगैत छलनि जे कदाच टूटि क' रहि गेल अपन निराधार आशा-अपेक्षा केँ देखि ओ लोकनि एतेक खिसिया क' रहि गेल छथि जे...। कदाच एही कारणेँ जिनक पार मे ओ रहैत छथिन तिनक तामस हरदम लहरल रहैत छनि..। कदाच तेँ ओहि सप्ताह भरि ओइ घर मे भात बहुत कम बनैत छै...। आ जतबा बनैत छै से कनिञा काकीक लेल नहि रहैत छनि...। हुनका लेल मकइ वा बड्ड भेल तँ गहुमक जनहा रोटी आ तरकारीक नाम पर किच्छो वा नोन-तेल। हुनका माछ-माउस वा पियाजु-लहसुन सँ दिक्कति होइत छनि। होइत छनि तँ होइत रहनु...। ओहि सप्ताह मे उपेति क' तीन-चारि दिन बनबे करतै...।

भीन भिनाउजक बादे सँ दुनू भाँइ दनादन प्रगति क' रहल छलाह...। गामक लोक केँ देखि क' ठकमूड़ी लागि जानि। दुइए साल मे दुनू भाँइ दड़िभंगा मे लक्ष्मीसागर मोहल्ला मे छपकी पर डेढ़-डेढ़ कट्ठा जमीन ल' नेने छलाह आ एतय गाम पर तीन-तीन कोठली पक्का घर सेहो बना नेने रहथि। बस दलानवला भाग टा पुराने छलै...। माटिक भीतवला एक टा पैघ कोठली। एहि कोठली सँ आँगन दिस जाउ तँ एत' सँ ओत' धरि दुआरि जकर एक दिस एक टा एकचारी कोठली। एहि मे कनिञा काकी रहैत छलीह। दलानवला पैघ कोठली मे एक दिस चारि-पाँच टा माटिक कोठी सभ जे आब प्राय: खालिए रहैत छलै...कहियो तोड़ि क' फेंका जयबाक प्रतीक्षा मे। एहि कोठली मे केओ बाढ़नि-सोढ़नि नहि दैत छलै...। साझी चीज साँग पर...। कहियो क' मोन होनि तँ कनिञे काकी बहारि-सोहारि दैत छलथिन—पारवालीक उलहन सुनियो क'। कोठली सँ बाहर आउ तँ दलानक बरंडा पर एक टा पुरना चौकी राखल...। गर्दा सँ भरल। दलानक काजे कोन? सरबन बाबू केँ गाम-गाम राजनीति करय सँ पलखति नहि आ राघव ललाक दलान छलनि गामक टीसन वा ब्रह्मस्थान वा पंचायत भवन जतय संगी सभक जुटान होइत छलनि...। के देखैए दलान केँ? दुनू केँ अपन-अपन परिवारक बेसी चिन्ता छलनि...। कहुना प्रगति करी...। से दुनूक प्रगति देखि कनिञो काकी चकित छलीह। जे लोकनि बापक श्राद्ध मे एक बीघा खेत बेच लेलनि...। से एही बीच मे एतेक पाइ कत' सँ आनि लेलनि? एहन अवसर पर ओ अपन कान छूबि बाबा वैद्यनाथ सँ माफी माँगि लेथि...। क्षमा करब हे बाबा! हमर नजरि नहि लगौक। काकीक बेटा तँ बेटा, पुतोहु सभ तँ आर होशियार छलथिन। मुट्ठी बान्हि क' खर्च करैत जाइत छलथिन। खास क' सासुक लेल तँ हुनकर सभक मुट्ठी किछु आर कसि जाइत छलनि...। ओ सभ किछु देखैत रहैत छलीह...बुझैत रहैत छलीह आ सहैत रहैत छलीह...।

गामक स्त्रीगण सभ प्राय: एहि बात लेल नितराइत रहैत छथि जे ओ चारि-चारि टा हरिबासर कयने छथि। मुदा, एहि दू बर्ख मे कनिञा काकी कतेक हरिवासर क' चुकल छलीह, से के जानय...। अपना केँ साधिक' राखि देने रहथि ओ...। एम्हर हम कहियो हुनका मुख पर तृप्तिक लेशो नहि देखि सकल छलहुँ। सदिखन जेना गिल्ल छाउर अउँसल...। ईह! की सुन्नर अउँठिया केस रहनि हुनक। से आब धड़धड़ा क' पकैत-ओझराइत बगड़ाक खोंता भ' गेल छलनि...।

इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ...

''हँ-हँ! चल' दियौ...चल' दियौ...।'' चारिम बेर दही परसल जा रहल अछि...। दहीक बारिकक संगे चीनी, डालना, आ बुनियाँक बारिक सेहो गतिशील-सक्रिय छथि...। बेसी लोकक पेट भरि चुकल छनि। तैयो रसना मानि नहि रहल छनि...। छीलल माथ...चानन लेपल कपार...पीयर धोती, पीयर जनेउ आ भागलपुरी दोपटा सँ शोभित सरबन बाबू आ राघव लला हाथ जोड़ि-जोड़ि क' आग्रह क' रहल छथिन, ''हड़बड़ाइ नहि जाइ जाउ। सभ केँ इच्छा भरि भोजन करय दियनु। कोनो वस्तुक कमी नहि...।''

जिनक पेट भरि चुकल छनि से मोने मोन अपन एहि मूर्खता पर पछता-खिसिया रहल छथि जे पहिने चूड़े बेसी ल' लेलाह। एतबे नहि, पहिले वा दोसरे बेर मे दही अहगर क' ल' लेलाह। ईहो नहि ध्यान देलनि जे गर्मीक पुरान दही खटगर होइत छै आ भोज मे तँ पहिने पुराने दही परसल जाइत छै। आब असली खायवला दही परसल जा रहल अछि...। मुदा, खाथु कोना? पेट मे जगह कहाँ छनि? आ बुनियाँ कोना खयताह? अपना केँ संसारक सभ सँ बड़का उलूकनन्दन बुझैत ओ लोकनि मुँह लटकौने किछु बेसी अग्रचेती सभ केँ देखि जरि रहल छथि जे कोना ओ सभ पहिने तँ हाथ बारने रहलाह आ आब हाथ-मुँह चारिम गेयर मे चला रहल छथि..।

हम सहटि क' कनिञा काकीक आँगन दिस बढ़ि जाइत छी। एत' अलगे अनघोल मचल अछि...। बाहर पुरुष वर्गक पहिल खेपक भोज आब लगिचायल छै। योजनानुसार स्त्रीगणक बिझो भ' गेल अछि। आब यावत पुरुष वर्ग भोजन क' कय उठत, अँइठ-कूठ उठाओल जायत, खरहरा देल जायत तावत स्त्रीगण केँ पारस देल जेतनि। पूरा आँगन भरल अछि...टोल भरिक बेटी-धी आ बूढ़-पुरान स्त्री सभ सँ...। सबहक हाथ मे थारी आ बट्टा। ककरो-ककरो हाथ मे बट्टाक बदला लोटा। पारस परसल जा रहल छै। सभ केँ पहिने ल' लेबाक हड़बड़ी लागल छै। दुनू देयादिनी अतिव्यस्त छथि।

''केओ छूटथि नहि। सभ केँ भरि इच्छा दियनु। हे दाइ सभ, पहिने पारस ल'क' अपन-अपन आँगन ध' अबै जाउ। आ हे, आँगने मे नहि रहि जायब। जल्दी सँ घुरि क' अबै जाउ आ भरि इच्छा भोजन करै जाउ। अहाँ सभ कुमारि-बारि छी...भगवती स्वरूपा छी। अहाँ सभ जे भरि पोख खा लेब आ भगवती केँ कहबनि तँ मा केँ अवस्स पइठ हेतनि...।'' जेठजनी अपन बोल केँ आर मधुर बनबैत आग्रह करैत छथिन।

''हँ-हँ किऐ नहि! जीबैत रह तँ गूह भात आ मुइला पर दूध भात। इह! नाटक ने देखू!! एहने पइठ भगवान अहूँ सभ केँ देथि!!!'' चउदह बर्खक मुँहफट बुचियाक टिप्पणी केँ सुनैत मातर ओकर बड़की बहिन कामिनी घबड़ा जाइत अछि। ओ बुचियाक मुँह पर तरहत्थी रखैत डँटैत अछि, ''बुचिया तोरा बाज' के ठेकान नहि छौ। तोहर ठोर पर बड़ी बड्ड पाक' लागल छौक। हरदम लुबलुब करैत रहैत छेँ। बेसी उचितवक्ताक सारि नञि बन।'' ई कहि कामिनी एक ठुनका बुचियाक गाल पर दैत अछि।

ई जेना बड्ड अनसोहाँत लगैत छै गितिया केँ। बुचिया ओकर संगी छै। दुनू मे 'फूल' लागल छै। आब कामिनी केँ किछु कोना कहौक गितिया, मुदा ओकर अप्पन जीह केँ के रोकि लेतै, ''अयँ यै जलबार वाली भौजी! गुंजा दीदी केँ नहि देखै छियनि। एहू बेर नहिए बजौलियनि? जाय दियौ। आबि क' की करितथि? माय केँ तँ चिबाइए गेलियनि अहाँ सभ...।'' गितियाक एहि कथन पर आस-पासक सभ चौंकि पड़ैत अछि। केओ बजैत तँ नहि अछि किछु, मुदा सभ केँ तामस बड्ड होइत छै। ई दुनू धोंछी सभ लाहेब करत। जँ जलबारवाली वा खौंरावाली सुनत तँ पता नञि की हैत? भोज खाइते रहि जयतीह छिछिआहो सभ! मुदा, लगैए, दुनू देयादिनी कदाच बुचिया वा गितियाक टिप्पणी नहि सुनि पौलनि अछि। यदि सुनबो कयने हेतीह तँ संभवत: अनठिया देलनि अछि...।

हम दलान पर आबि जाइत छी। बस्स। किछु काल आर। पहिल खेपक भोज सम्पन्न भ' जेतै। आ फेर पान-सुपारी लेल घमासान मचत...। हम सहटैत-सहटैत अपन दलान पर आबि जाइत छी। आँगनक गेट बन्न अछि। माय सरबन बाबूक आँगन गेल अछि। हम दलानक

आगाँ भालसरीक छाँह मे कुर्सी ध' बैसि जाइत छी...। अकास साफ अछि...। कूदि-फानि क' मेघ सभ दखिन-भर चलि गेल अछि। भ' सकैए पच्छिम मे बरसल होअय। एहि गाम धरि अयबाक साहस नहि क' सकल। संभवत: इन्द्र कें अपन पराजय मोन पड़ि गेल हेतनि...।

अन्हरियाक पंचमीक उदास चान रेलवेक ओइ पार आमक गाछीक उपर उगि आयल अछि। नहू-नहू रेलवे आ तकर ओइ पार बल्ला मे ठाढ़ इमलीक बूढ़ भूतहा गाछ देखाइ पड़ि रहल अछि...। नहि जानि कतोक भूत-प्रेतक बास छै ओहि गाछ पर...। ई कोनो हम नहि कहि रहल छी। कतेक लोक देखि चुकल छथि। कोनो-कोनो महिसवार कें तँ पसर चरबैत काल घेरियो नेने रहै आ नकिआयल स्वर मे तमाकुल मँगने रहै...। सुनै छियै, ओहि इमली गाछ पर जतेक भूत-प्रेत अछि से प्राय: वैह अछि जे कोनो-ने-कोनो कारेणें रेल सँ कटल अछि...। जहिया ई रेल लाइन बनल हेतै तहिया के सोचने हैत जे कतेक लोकक लेल अंतिम प्रस्थानक कतेक सहज-सुलभ-सस्त-साधन उपलब्ध कयल जा रहल छै...। मुदा नहि! कहाँ प्रस्थान क' पबैत अछि केओ? कहाँदन सभ कें ओही इमली पर वास लेब' पड़ैत छै...। की कनिञा काकी सेहो ओही पर...? मुदा, एहि ग्यारह-बारह दिन मे कहाँ कतहु नजरि आयल अछि हुनक धूआ? खाली ओहि राति...।

एक मुट्ठी भात...

ओहि राति हमरा लग सूतलि माय फोंफ कटैत रहय। बेटा कें वात्सल्यक सुरक्षा दैत...। की हम सुरक्षित भ' गेल रही? खिड़की पर सँ कनिञा काकीक मुंड जरूर निपत्ता भ' गेल रहनि...परंच मोन मे सन्िआयल हुनक आँखि ओ बेधक दृष्टि...। की कहय चाहैत रहय ओ दृष्टि...? की अर्थ रहै ओकर...? ओना किऐ देखने रहथि कनिञा काकी हमरा ओइ दिन?

ओइ दिन कनिञा काकीक नाति आयल रहनि—नानी कें देखय। माय सँ जिद् क' कय। कतबो मजगूत हृदयक होथि गुंजा परंच मायक लेल दरेग तँ छलनिहें ने। की करितथि? नहि रोकि सकलथिन बेटा कें। कहने रहथिन जे नहि मानबें तँ जो मुदा साँझ धरि घुरि अबिहें।

तहिया काकी छोटजनीक पार मे छलीह। भोरे-भोर आबि जुमल ओहि बारह बर्खक पाहुन कें देखिते छोटजनीक पारा चढ़ि गेलनि। फल भोग' पड़लनि धिया-पुता कें। अनेरे माय सँ मारि खाइत ओ सभ हकबका गेल जे ओकर सभक अपराध की छै? तामसे छोटजनी बहुत कम मात्रा मे भात बनौलनि। एतबहि जे हुनक अपनहुँ नेना सभ लेल अपर्याप्त रहनि...। ओ ओहि बारह बर्खक पाहुनक आगाँ मकइक रोटी आ रामतरोइक तरकारी परसि देलथिन आ नहाय लेल बाड़ी मे चलि गेलीह...। एम्हर ओ बच्चा कहुना क' दू कौर खयलक आ नानीक मुँह ताकय लागल...। काकीक करेज मे हूक उठलनि...। हुनक आत्मा कलपि उठलनि...। हुनका लगलनि जेना अन्तस मे जमल कोनो वस्तु पिघलि रहल होनि आ गरा बकौर लागि रहल होनि...। ओ अपना क' कहुना क' सम्हारलनि आ एक टा निर्णय लेलनि...। लाज तेयागि क' जेठजनीक दुआरि दिस बढ़लीह...कनेक थकमकयलीह...आ चढ़ि गेलीह दुआरि पर...।

''हीरा सुन्नरि, एक मुट्ठी भात देब?'' ई सुनिते हीरा सुन्नरि किटकिटा उठलीह।

''केओ कमा क' राखि गेल छै की? हुँह! अंगोर राखिक' पटपटा नहि देबै जे भात देबै?''

''कनिञा, हमर जे दुर्दशा करबाक होअय, से क' लेब...मुदा ओहि अबोध कें...?'' पहिल बेर कनिञा काकीक स्वर मे आपत्ति प्रकट भेल रहनि।

''अरे, वाह रे अबोध! ककरो बापक किछु धारने छियै की? केओ खराँत राखि गेल अछि की? एतबे दरेग छनि तँ निकालथुन ने कोसलिया आ खुअबथुन रसगुल्ला...।''

देयादिनीक चिकरब सुनि छोटजनी बाड़ी मे सँ प्रकट भेलीह...सद्य:स्नाता...सही अर्थ मे एकवस्त्रा...भीजल केस नग्न पीठ पर लहराइत... साया कें छाती पर वामा हाथें सम्हारने...। स्थिति कें अँटकारैत-अँटकारैत हुनक कान मे जेठजनीक संवादक अंतिम अंश नीक जकाँ पड़लनि,

''...बनैत जायत सभ धन्ना सेठ...आ...एक टा पाहुन कें दू मुट्ठी भात खुअबैत हींग चूब' लगैत छै!''

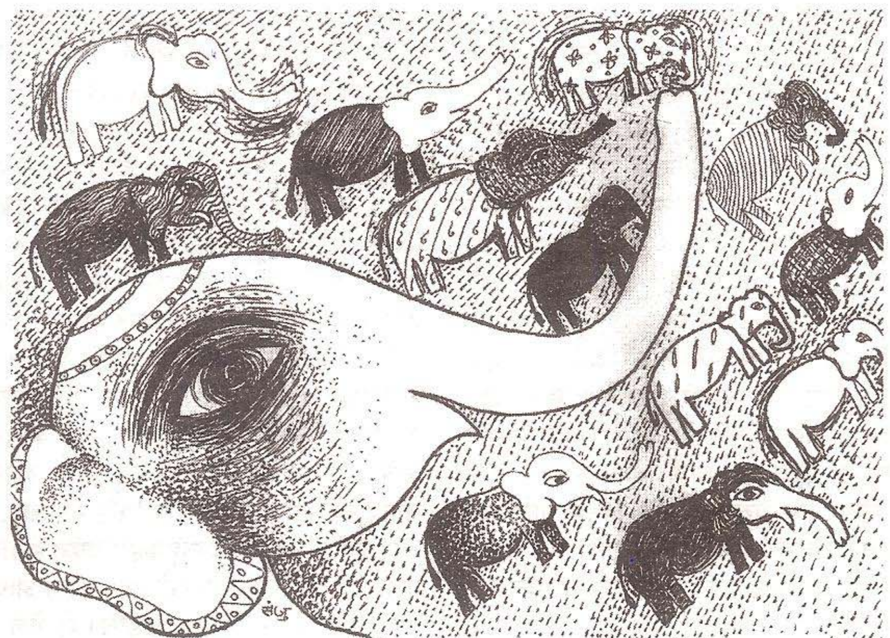
छोटजनी कें लेसि देलकनि। तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि गेलनि...। ओ खरमासक आगि जकाँ लहकि उठलीह...। ओ जल्दी-जल्दी सायाक डोरी कें छाती पर कसलनि आ कनिञा काकी संग व्यास ककाक सात पुश्तक उद्धार करैत लपकलनि। हुनक झोंटा पकड़ि क' घिचलनि। कनिञा काकी तलमला क' खसि पड़लीह...। आब ओ दुनू हाथें कसि क' झोंटा कें ध' लेलथिन आ घिसिअबैत-घिसिअबैत अपन दुआरि लग आनि पटकि देलथिन...।

''आइ आब' दे मुन्ना के पप्पा कें तँ भात खुअबैत छियौ...। तोरो आ तोहर नाति कें सेहो...। गै राँड़ी...बुढ़ौरी! तों गेलय की करय मुदइ के दुआरि पर? हमरा बदनाम करय लेल? आइ तोहर भथियान ने चहका देलियौ तँ हमहू भोला मिसरक एक बूँदक नहि...।''

एवं प्रकारें सासुक इलाज कय ओ अपन घर मे कपड़ा पहिरय चलि गेलीह आ ओत्तहि सँ गरियबैत रहलीह...।

चटुआ पर भोजन लेल बैसल नाति नानीक दुर्दशा देखि पहिने तँ हकबकायल...फेर किछु नहि फुरयलै तँ कानय लागल...। आ कनिञा काकी! ओ ने किछु बाजि रहल छलीह आ ने कानि रहल छलीह। बस चितांग पड़ल शून्य दृष्टिएँ अकास दिस तकैत रहलीह...। नातिक कानब सुनि चेत भेलनि...। जेना-तेना उठलीह आ नाति कें पँजिया क' कानय लगलीह...।

ओही दिन बेरू पहर नाति अपन गाम चलि गेलनि। संयोग सँ हम खरदाहाक खेत देखि



आपस होइत रही तँ देखलियै जे रेलवेक ओइ पार जे गाछी सभक बाद डिस्ट्रिक्ट बोर्डवला साबिकक सड़क छै ततहि कनिञा काकी नाति कैँ विदा क' रहल छथि...। विदा करबाक ढंग कनेक विचित्रे सन...। भरि पाँज क' नाति कैँ पकड़ने ओकर मुँह, आँखि, कान, कपार सभ कैँ धड़ाधड़ चूमि रहल छलीह। नानीक पाँज मे फँसल नाति कसमसा रहल छल, मुदा ओ ओकरा जेना मुक्त कर' लेल तैयार नहि रहथिन...। कननमुँह भेल नाति कैँ गसियाक' पकड़ने विह्वल भेलि कनिञा काकी अचक्के हमरा समक्ष मे ठाढ़ देखि ठमकि गेल रहथि...। नाति मुक्त भ' पैघ-पैघ साँस लेब' लगलनि...। तखन कनिञा काकीक आँखि विचित्र छलनि। नजरि झुकि गेल रहय हमर...। नाति विदा भ' गेलनि। हमरा लागल जे ओ आब गाम घुरतीह। पुछलियनि तँ ओ हमरा बढ़ि जयबाक संकेत कयलनि आ अपने जाइत नाति कैँ पाछाँ सँ देखैत रहलीह...देखैत रहलीह...। की ओ वस्तुतः नातिए कैँ देखि रहल छलीह वा आर किछु...? हम पच्छिम दिस अपन गाम जा रहल छलहुँ...। कतेक बेर घुरिक' तकलहुँ तँ देखल जे ओ ओहिना ठाढ़ पूब दिस देखि रहल छथि...लगातार...।

ओहि दिन जखन ओ गाम पर घुरि क' अयलीह तँ अपन दुःख की कहितथि बेटा सँ? ओ तँ पहिनहि सँ तैयार भेल बैसल रहनि स्वागतक हेतु। एक टा हाथ छोड़ब रहि गेलै नहि तँ कोन दुर्दशा बाकी रखलकनि राघव लला! बेटाक मुँहें ओहन घिनौन-घिनौन गारि सुनिक' काकी कैँ लागि रहल छलनि जे हाड़ टा रहि जायत नहि तँ देहक माउस गलि गलि क' खसि पड़त...। इच्छा भेलनि जे जँ एहि काल धरती फाटि जाइत तँ ओहि मे समा जइतहुँ...। मुदा से संभव कहाँ छलनि...?

सरबन बाबू एहि सभ सँ निरपेक्ष। हुनक प्रत्येक भंगिमा जेना यैह कहि रहल छलनि, ''हमरा नहि कह किछु। हमर पार मे तों एखन नहि छें। ओकरे कही जकर पार मे छही...।''

अगत्या ओहि दिन कनिञा काकी साँझ सँ ल'क' राति धरि टोल-पड़ोस आ गामक कोन अल्लाँ बाबू आ फल्लाँ बाबूक ओत' नहि गेलीह...किनकर-किनकर खुशामद नहि कयलनि...''हमर निसाफ करै जाउ...!'' मुदा, कोनो गोटे दोसराक घरेलू मामिला मे बजबाक जरूरति नहि बुझलनि...। दिन भरि दोसराक घरेलू बात कैँ कौचर्यक स्थायी विषय बना क' मजा लेनिहार स्त्री-पुरुष प्रत्यक्षतः हिनक मामिला मे हस्तक्षेप करब अनुचित बुझलनि...। असल मे सरबन बाबूक ब्रह्मपेंच आ राघव ललाक लंठइ सँ सबहक पिल्ही चमकि रहल छलनि...। के उपकार क' कय फँसत ग'। जाय दियौ। फेर तँ माय-बेटा, सासु-पुतोहु एक्के हैत...। बुड़बक बनब हम सभ। छोड़ह-छोड़ह। हमरा सभ कैँ कुकुर कटने अछि की? जानय जौ जानय जाँत। हमरा सभ कैँ अपने कोन कम समस्या अछि? आ जत' दू टा बासन रहैत छै ओतहि ने ढनमन होइत छै...। तखन घरक बात ल'क' दरबज्जे-दरबज्जे अँगने-अँगने बौआयब...। ई कोन नीक बात भेलै? नञि अपने चैन सँ रहतीह आ ने हमरा सभ कैँ रह' देतीह गुंजाक माय। लगैए ईहो सनकल जाइत छथि...।

भोर जे कहियो नञि भेलै...

सनकि तँ गेले रहथि ओ। तखन ने ओहन विचित्र रूप धारण क' नेने रहथि...। ओहि राति ओ घुरिक' आँगन नहि गेलीह। दलानवला कोठली मे कोठी सभक दोग मे जाक' पड़ि रहलीह...। एक दिन...दू दिन...तीन दिन...। हम एहि बीच मे दड़िभंगा गेल रही। तेसर दिन जखन चारिबजिया ट्रेन सँ गाम अयलहुँ तँ ज्ञात भेल जे तीन दिन सँ ओ ओही अवस्था मे बिनु खयने-पीने ओही ठाम कखनो बैसल, तँ कखनो पड़ल रहैत छथि...। ने तँ किछु बजैत छथि आ ने ककरो बातक उत्तर दैत छथिन। निकासो लेल बाहर जाइत केओ नहि देखलकनि अछि। भ' सकैए रातिक' एकांत मे जाइत होथि। सभ समझा-बुझा क' हारि गेल अछि...हुनका पर कोनो असरि नहि...।

हम जखन पहुँचल रही तखन तुरंत सूर्य अस्त भेल छलाह। दलानक कोठली अपेक्षाकृत फइल रहलाक बादो किछु भरिआयल सन आ अन्हार सन लागि रहल छलै। कदाच् कोठी सभक कारणें...। आँखि गड़ाक' देख' पड़ल रहय हमरा...। हम मृदुल स्वर मे टोकलियनि, ''कनिञा काकी!'' दू-तीन बेर टोकलाक बादो ओ उठिक' देबालक सहारा ल' बैसलीह... आ नजरि उठाक' तकलनि...। चाड़क घसकल खपड़ा सँ बनल छिद्र सभ द'क' तुरंते डूबल सूर्यक ललौन प्रकाश कोठली मे जत'-तत' आबि रहल छलै...। प्रकाशक एहने एक टा टुकड़ा कनिञा काकीक बगल मे देबाल पर पड़ि रहल छलै...। ओहि मद्धिम होइत ललौन प्रकाश मे नोनी लागल देबाल आ कोठी सभक जर्जर स्थिति पर नजरि गेल... संगहि नजरि गेल कनिञा काकीक चेहरा पर...। जनम-जनम के उदासी जेना हुनक आँखि मे जमि क' रहि गेल रहै...। नहुए कंपित ठोर जेना किछु कहय चाहैत होअय, मुदा कहि नहि पाबि रहल होअय...। हम आग्रह कयने रहियनि जे अनशन तोड़थि। जे भेलै से भेलै। ओ तँ माय छथिन। बिसरि जाथु सभ किछु। हमरा विश्वास रहय जे ओ हमर बात मानि जयतीह...। मुदा, ओ टस-सँ-मस नहि भेलीह। हारिक' हम पुनः भोर मे अयबाक बात कहि चलय लगलहुँ...। अचानक देखल जे हुनक ठोरक कंपन बन्न भ' गेल रहनि आ आँखि एक टा विचित्र प्रकारक चमक सँ चमकय लागल रहनि...।

रोगाह इजोरिया सँ झँपाइत गाम...!

''एह! थइ-थइ भ' गेलैक...। महो-महो भ' गेलैक...। कनिञा काकीक दुनू बेटा कमाल क' देलनि...। कतेक नीक जकाँ अपन कर्तव्य निमाहि देलनि...।'' भोज खयनिहार लोकनिक अघायल टिप्पणी चलि रहल अछि...। खुशीक आवेग मे किछु गोटे अँइठे मुँहे नारा लगाब' लगलाह अछि...।

''कनिञा काकीक?''
''जय!''
''सरबन बाबूक?''
''जय!''
''राघव बाबूक?''
''जय!''
''धर्म केर?''
''जय हो!''
''अधर्म केर?''
''नाश हो!''
''प्राणी सभ मे?''
''सद्भावना हो!''
''विश्व केर?''
''कल्याण हो!''...

पहिल खेपक भोज समाप्त भ' गेल अछि। चन्द्रमा नहू-नहू अकास मे चढ़ि रहल छथि...मुदा इजोरिया साफ नहि अछि...। धूसर मटिआह रंगक...जेना रोगाह होअय...जांडिस सँ पीड़ित...। एहि रोगाह इजोरिया सँ आच्छादित गाम क्रमशः शांत भ' रहल अछि...।

ओम्हर सरबन बाबूक दलान पर पहिल खेपक ब्राह्मण-लोकनि पान-सुपारी ल'क' जा चुकल छथि...। खरहरा देल जा रहल अछि...। आ दोसर खेप मे बैसबाक लेल प्रतीक्षारत बुभुक्षु ब्राह्मण लोकनि तत्पर छथि...।

आ एत' हम एहि कुर्सी पर जेना जमि क' रहि गेल छी...की करी? जाइ कि नञि जाइ?



संपर्क : द्वारा-डॉ. पी. के. झा
पी.जी.टी. (हिंदी), केंद्रीय विद्यालय,
कटिहार, बिहार-854105
मो. 9430038969